RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No. of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

मार्च, 2024

उत्तर प्रदेश के सहकारी आन्दोलन का दर्पण

मूल्य : 15.00

सहकारिता

हिन्दी मासिक पत्रिका

महिला सशक्तीकरण के आलोक में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - पृष्ठ 21

सृष्टि की जीवन-रेखा है नारी - पृष्ठ 15

श्री श्रीकांत गोस्वामी प्रबंध निदेशक पी.सी.यू./अपर आयुक्त एवम् अपर निबंधक महोदय द्वारा लिखित पुस्तक के द्वितीय संस्करण का विमोचन प्रमुख सचिव सहकारिता महोदय तथा आयुक्त एवं निबंधक सहकारिता महोदय द्वारा किया गया।

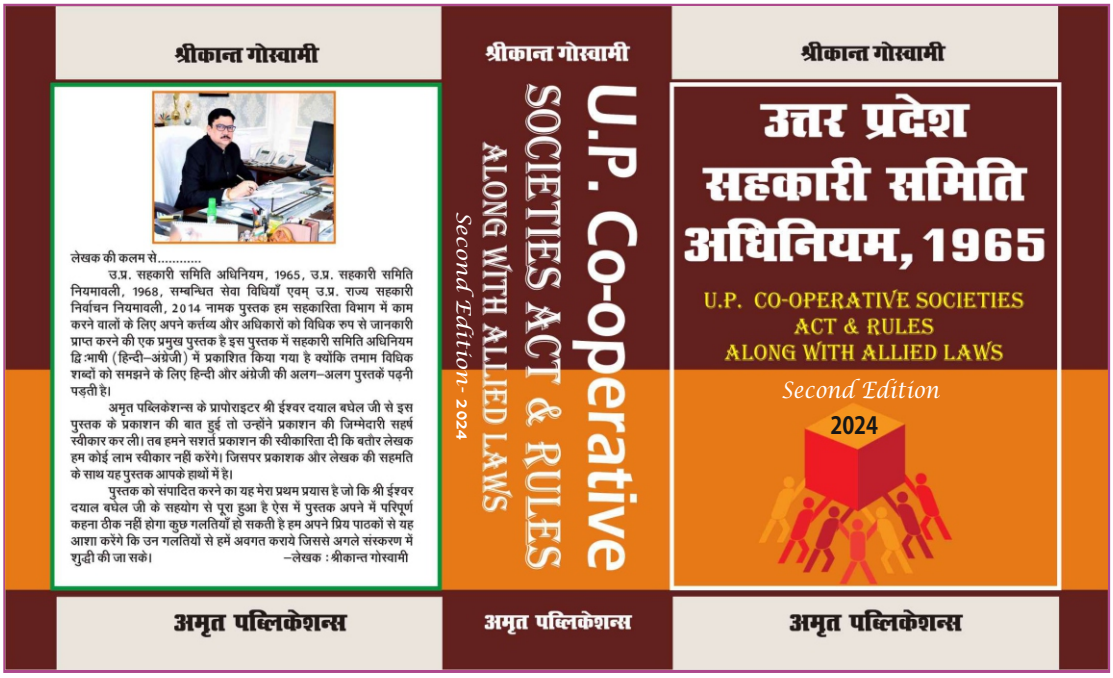

सहकारिता

वर्ष-61 अंक-09 मार्च, 2024

संरक्षक

अनिल कुमार (आई.ए.एस.)
आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता, उ0प्र0

श्रीकान्त गोस्वामी
प्रबन्ध निदेशक/प्रधान सम्पादक

सवीन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (प्रशा0,शिक्षा)

सुनील कुमार दिवाकर
प्रभारी सम्पादक

पवन कुमार वर्मा
आवरण एवं लेजर टाइप/प्रूफ रीडर

सदस्यता शुल्क :

एक प्रति : 15.00 रूपये
वार्षिक (बारह अंक) : 150.00 रूपये (डाक से)
आजीवन : 1500.00 रूपये

सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत या बैंक ड्राफ्ट/चेक द्वारा सम्पादक ''सहकारिता'' यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) के पते पर भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय :

यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) 226 001.
फोन नं0: 0522-4004577 मो0 नं0 : 9415094114
ई-मेल : sahkarita@gmail.com,

स्वत्वाधिकारी यू0पी0 कोऑपरेटिव यूनियन लि0, प्रकाशक, मुद्रक, सुनील कुमार दिवाकर द्वारा सहकारी प्रेस 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रभारी सम्पादक - सुनील कुमार दिवाकर।

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। इसमें सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा

अनुक्रमणिका

क्र.सं. विषय ..... पृ0सं0

1. सम्पादकीय 4
2. लोकमंगल की अवधारणा पर आधारित यह बजट प्रदेश के समग्र और संतुलित विकास का एक आर्थिक दस्तावेज 5
3. होलीः थोरी शरीर पे थोरी हिए पे 7
   - डॉ0 ओ.पी. मिश्र
4. सहकारी फागुन/प्रेम चन्द्र सैनी 10
   - प्रेम चन्द्र सैनी
5. अंतरिम बजट और किसान 11
   - डा. भागचंद्र जैन
6. जय मां भारति 13
   - किरन कान्ती
7. होली और ईद 14
   - उमेश शुक्ल
8. सृष्टि की जीवन-रेखा है नारी 15
   - नमिता वैश्य (शिक्षिका)
9. 'लेखांकन साक्षरता' 18
   - सीएमए गोविन्द शुक्ल
10. महिला सशक्तीकरण के आलोक में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 21
    - गौरी शंकर वैश्य ''विनम्र''
11. दिन प्रतिदिन बढ़ता साइबर क्राइम 24
    - मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
12. जल, जीव और जीवन 25
    - श्रीमती राजश्री दुबे
13. अपनी अपनी होली 27
    - अयोध्या प्रसाद
14. कर्मयोगी पं0 दीनदयाल उपाध्याय 28
    - अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 'सन्नी'
15. लोकगीतों में रामकथा अथवा लोकगीतों में राम और अयोध्या 31
    - डा. शिव राम पाण्डेय
16. अयोध्या : आस्था एवम् अर्थशास्त्रा एक अध्ययन 37
    -संजय कुमार मिश्र 'रजोल'
16. रामराज्य की छाया में मोदी राज 39
    - डा. राघवेन्द्र शुक्ल'
17. ''अपना काम'' 42
    - सारंग त्रिपाठी

❑❑❑

सहकारी बन्धुओं व पाठकों से अपील

समस्त पाठकों, सहकारी जगत से जुड़े सरकारी व संस्थागत अधिकारी, कर्मचारी तथा सहकारी बन्धुओं से अनुरोध है कि आप अपने जीवन से जुड़ी कोई विशेष उपलब्धि/उत्कृष्ट कार्य हेतु संतुलित व्याख्या, सुझाव व विचार ''सहकारिता'' मासिक पत्रिका, यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) पर भेज सकते हैं, या फिर ई-मेल sahkarita@gmail.com पर कर सकते हैं। आपके विचार सादर आमंत्रित हैं।

- प्रभारी सम्पादक

सुनील कुमार दिवाकर

सम्पादक की कलम से

सरकार ने सहकारी क्षेत्र के महत्व को समझते हुये सहकारिता मंत्रालय का गठन किया। सहकारी क्षेत्र ग्रामीण भारत के सामाजिक आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहा है। सहकारिता क्षेत्र के समक्ष कई योजनायें हैं जिसमें छोटे और सीमान्त किसानों को संगठित कर उत्पादकता बढ़ाने की प्रक्रिया में शामिल कर कृषकों को कृषि ऋण विस्तार सेवायें और गुणवत्तापूर्ण बीज, उर्वरक तथा भण्डारण सुविधायें उपलब्ध करा कर उन्हें लाभान्वित कराना है। कृषकों के उत्पादों की बेहतर कीमत निर्धारण करना एवं उनके समुचित विकास की जरूरतों को समझना और उसे पूरा करना सहकारिता का मूल उद्देश्य है। सरकार की ओर से सहकारिता विस्तार सेवाओं में विकास के प्रति सक्रिय योगदान के कारण सब कुछ सम्भव हो सका है।

सरकार की ओर से राष्ट्रीय नीति के अधीन जैव विकास के क्षेत्र में ग्रामीण सशक्तीकरण को ध्यान में रखते हुये सहकारी संस्थाओं और पंचायतों को विशेष महत्व दिया है सहकारी संस्थाएं इस काम को अपनी जिम्मेदारी समझकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। आज देश जिस प्रकार खाद्यान्न के उत्पादन पर निर्भर है उसमें सहकारिता की भूमिका को अग्रणी माना जा रहा है। खेती के बल पर देश–प्रदेश को आत्म निर्भर बनाने के साथ पर्यावरण को भी स्वच्छ बनाने में सफलता प्राप्त होगी। सहकारिता का प्रमुख उद्देश्य प्रदेश के सहकारी सदस्यों एवं किसानों को कृषि उत्पादन में बढ़ावा देना उनकी उपज का अच्छा मूल्य दिलाना है जिस प्रकार सहकारी ऋण योजना का प्रमुख उद्देश्य कृषक परिवारों को, कृषि कार्यों हेतु ऋण की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की यथा समय पर उचित ब्याज दरों पर आपूर्ति कर उनकी आर्थिक समृद्धि करते हुए देश के कृषि उत्पादन एवं समग्र विकास में वृद्धि करना है।

सहकारिता आन्दोलन के विकास के लिए सहकारी शिक्षा प्रशिक्षण एवं नेतृत्व के लिए उचित प्रबन्ध की और अधिक आवश्यकता है। इस दिशा में समुचित प्रगति हो रही है। इस क्षेत्र में काम करने वाले अधिकारी, कर्मचारी/पदाधिकारी एवं सहकारी बन्धु सहकारिता के सिद्धान्त एवं व्यवहार से पूर्ण रूप से परिचित हैं और हो रहे हैं। सहकारिता आन्दोलन की जड़ों को और मजबूत करने के लिए पर्याप्त विकास की आवश्यकता पर और जोर देने की आवश्यकता है।

उत्तर प्रदेश में सहकारिता क्षेत्र में निबन्धक की भूमिका सहकारी आन्दोलन की प्रगति दार्शनिक एवं मार्गदर्शक है। इसलिए सहकारी योजनाओं के वृहद कार्यक्रम के सफल संचालन का दायित्व निबन्धक को जाता है। प्रदेश में सहकारी शिक्षा प्रशिक्षण का कार्यक्रम यू0पी0 को–आपरेटिव यूनियन द्वारा चलाया जा रहा है जिसे प्रदेश में स्थापित प्रशिक्षण केन्द्र भली भांति संचालन कर रहे हैं। सहकारी आन्दोलन की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि सहकारी शिक्षा के लिए उचित प्रबन्ध किया जाय। सहकारी शिक्षा के विकास हेतु यू0पी0 को–आपरेटिव यूनियन अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है। ❑

लोकमंगल की अवधारणा पर आधारित यह बजट प्रदेश के समग्र और संतुलित विकास का एक आर्थिक दस्तावेज

आस्था, अन्त्योदय और अर्थव्यवस्था को समर्पित 07 लाख 36 हजार 437 करोड़ रू0 से अधिक का यह बजट अब तक का प्रदेश का सबसे बड़ा बजट

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रभु श्रीराम लोक मंगल के पर्याय हैं। प्रदेश का वित्तीय वर्ष 2024-25 का बजट लोकमंगल की भावनाओं के साथ प्रभु श्रीराम को समपि।त किया गया है। 'जेहि महुँ आदि मध्य अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवाना'। बजट की शुरूआत, मध्य और अन्त में प्रभु श्रीराम हैं। लोकमंगल की अवधारणा पर आधारित यह बजट प्रदेश के समग्र और संतुलित विकास का एक आर्थिक दस्तावेज है। वित्तीय वर्ष 2024-25 के बजट का आकार 07 लाख 36 हजार 437 करोड़ रूपये से अधिक का है। यह प्रदेश का अब तक का सबसे बड़ा बजट है। वर्ष 2023-24 की तुलना में इस वर्ष बजट में 6.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

मुख्यमंत्री विधान सभा में वित्तीय वर्ष 2024-25 का बजट प्रस्तुत होने के उपरान्त विधान भवन स्थित तिलक हॉल में आयोजित प्रेसवार्ता को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह बजट आस्था, अन्त्योदय और अर्थव्यवस्था को समर्पित है। बजट में बढ़ोत्तरी डबल इंजन सरकार की प्रदेश की अर्थव्यवस्था को विस्तार देने तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' के विजन के प्रति प्रतिबद्धता को प्रस्तुत करती है। यह बजट उत्तर प्रदेश को देश का ग्रोथ इंजन तथा 01 ट्रिलियन डालर की अर्थव्यवस्था बनाने की प्रधानमंत्री की संकल्पना का प्रतिनिधित्व करता है। विगत 07 वर्षों में राज्य की अर्थव्यवस्था को दोगुना करने में सफलता प्राप्त हुई है। आज उत्तर प्रदेश देश की सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। उत्सव, उद्योग और उम्मीद, यही है, नए उत्तर प्रदेश की तस्वीर।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने अपना पांचवां

बजट प्रस्तुत किया। प्रदेश सरकार का यह आठवां बजट है। प्रत्येक बजट प्रदेश के लोकमंगल के लिए किसी थीम के साथ प्रस्तुत किया गया है। प्रदेश सरकार का वर्ष 2017-18 का बजट अन्नदाता किसानों को तथा वर्ष 2018-19 का बजट प्रदेश के इन्फ्रास्ट्रक्चर तथा औद्योगिक विकास को समर्पित था। वर्ष 2019-20 का बजट मिशन शक्ति अभियान को आगे बढ़ाते हुए महिला सशक्तिकरण के लिए समर्पित किया गया था। वर्ष 2020-21 का बजट प्रदेश की युवा ऊर्जा को समर्पित था। वर्ष 2021-22 का बजट स्वावलम्बन से शक्तिकरण के अभियान को समर्पित था। वर्ष 2022-23 का बजट अन्त्योदय से आत्मनिर्भरता का बजट था। वर्ष 2023-24 का बजट त्वरित एवं सर्वसमावेशी विकास को समर्पित किया गया।

मुख्यमंत्री ने वर्ष 2024-25 के बजट के लिए वित्त मंत्री, अपर मुख्य सचिव वित्त दीपक कुमार तथा प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा कि बजट में पहली बार कैपिटल एक्सपेंडिचर के लिए 02 लाख 03 हजार 782 करोड़ 38 लाख रूपये का प्राविधान किया गया है। यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि अवसंरचना पर धनराशि व्यय करने से रोजगार का सृजन होता है तथा अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ होती है। प्रदेश सरकार प्रारम्भ से ही समग्र विकास की अवधारणा पर कार्य करती रही है। परिणामस्वरूप प्रदेश सरकार राज्य के बजट का दायरा बढ़ाने में सफल हुई है। वर्ष 2016-17 में 12-12.50 लाख करोड़ रूपये की तुलना में वर्ष 2024-25 में प्रदेश की जी0डी0पी0 25 लाख करोड़ रूपये हो गई है। प्रदेश की जी0डी0पी0 में दोगुने से अधिक वृद्धि करने में सफलता प्राप्त हुई है। इस दौरान प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय भी दोगुना हुई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2016-17 में प्रदेश की अर्थव्यवस्था देश में छठे स्थान पर थी। आज प्रदेश देश की नम्बर दो की अर्थव्यवस्था बन चुका है। यह सफलता इसलिए प्राप्त हुई, क्योंकि प्रदेश सरकार द्वारा कर चोरी व रेवेन्यू लीकेज रोकने के

लिए अनेक उपाय तथा रिफॉर्म किए गए। परिणामस्वरूप आज उत्तर प्रदेश एक रिवेन्यू सरप्लस स्टेट बना है। बिना कोई अतिरिक्त कर लगाए तथा कामन मैन को लोक कल्याणकारी योजनाओं के साथ जोड़ते हुए विगत सात वर्षों में प्रदेश के राजस्व में कई गुना वृद्धि हुई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार को राजकोषीय घाटा नियंत्रित करने में भी सफलता प्राप्त हुई है। प्रदेश का राजकोषीय घाटा 3.46 प्रतिशत है, जो रिजर्व बैंक द्वारा एफ0आर0बी0एम0 एक्ट में निर्धारित 3.5 प्रतिशत की सीमा से कम है। जहां एक ओर प्रदेश सरकार का विजन सुरक्षा, विकास और सुशासन है, वहीं बजट में राजकोषीय अनुशासन भी निहित है। राज्य सरकार ने प्रदेश का विकास किया है, लोगों को सुरक्षा प्रदान की है तथा सुशासन के लक्ष्यों को भी प्राप्त किया है। साथ ही, बजट में राजकोषीय संतुलन तथा अनुशासन बनाए रखने के लिए पूरी प्रतिबद्धता और ईमानदारी से कार्य भी किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में विगत 07 वर्षों में बेरोजगारी की दर को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त हुई है। वर्ष 2016-17 में बेरोजगारी दर

19.2 प्रतिशत से अधिक थी। आज यह घटकर लगभग 2.4 प्रतिशत हो गयी है। रोजगार के नए अवसर सृजित किए गए हैं। ❑❑

होली : थोरी शरीर पे थोरी हिए पे

डॉ0 ओ.पी. मिश्र,
डी.लिट (अर्थशास्त्र)
अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्रान्त सम्मान–2023
अवन्तीबाई साहित्य सम्मान–2021
विद्या भूषण सम्मान–2014

हिन्दुओं के चार प्रमुख पर्व हैं- रक्षाबंधन, दशहरा, दीपावली, और होली। इन सभी पर्वों के प्रयोजन हैं। रक्षाबंधन विपत्ति और अमंगल से रक्षा करने के आह्वान का पर्व, दशहरा आसुरी शक्तियों पर दैवी शक्तियों की विजय का पर्व, दीपावली 'तमसो मां ज्योर्तिगमय' का पर्व और होली उल्लास का पर्व है। प्राचीन काल में फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को आर्यजन नए गेहूँ और जौ की बालियों के हवन से अग्निहोत्र करते थे। जलती अग्नि में गेहूँ और जौ की बालियों को भूनने की परम्परा सत्ययुग से चली आ रही है। कृषि प्रधान देश में फसल के पकने और उसके भारी उत्पादन की आशा किसानों को उल्लास से भर देती है। नवान्न के उपभोग के पूर्व उसे अग्नि देव को अर्पित करना वे अपना धार्मिक कार्य मानते आ रहे हैं। अनाज की बालियों को संस्कृत में होलक कहते है। प्रज्ज्वलित अग्नि में उन्हे भूनने और आनंद में झूमने की संज्ञा होली हो गयी है। बाद में होली के साथ कई दंत कथाएँ जुड़ गई। इनमें प्रमुख है नास्तिक हिरण्यकश्यप द्वारा अपने पुत्र और विष्णु भक्त प्रहलाद को विष्णु उपासना से विरत करने के अनेक यातनाएँ देना और अन्त में होलिका (हिरण्यकश्यप की बहन) जिसे अग्नि में न जलने का वरदान प्राप्त था, का अग्नि के ढेर में प्रहलाद को लेकर बैठना। वह अग्नि समूह में प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर बैठी। होलिका जल गई और प्रहलाद सुरक्षित बाहर आ गए। इस चमत्कारी घटना के स्मृति स्वरूप आज भी उपलों और लकड़ियों को एकत्र किया जाता है। पूर्णिमा की रात या शुभ मुहूर्त में उसमें आग लगा दी जाती है। उस प्रज्वलित अग्नि की लोग परिक्रमा करते हैं और होलिका या होली की जय बोलते हैं लेखक का तो विनम्र मत है कि ''जय प्रहलाद'' कहा जाना प्रत्येक दृष्टि से उपयुक्त है। लोग अपने घरों में भी ऐसा ही करते हैं। अगला दिन (धुलेंडी) का होता है। इस दिन पुरूष, महिलाएँ, किशोर और किशोरियों एक-दूसरे पर रंग डालते हैं, माथे पर अबीर और गालों पर गुलाल लगाते हैं। 'उड़त अबीर लाल भए बादर' की पंक्ति साकार हो उठती है। शाम को गले मिलने और मिठास (विशेषकर गुझिया) खिलाने का दौर चलता है। चिंता का विषय है कि पिछले चन्द दशकों में होली का स्वरूप विकृत हो गया है। टेसू और पलाश के रंगों का स्थान रासायनिक रंगो ने ले लिया है। गुलाल मिलावटी है। कुछ लोग कीचड़ और गोबर का प्रयोग कर प्रेम के बहाने अपनी खिन्नता और शत्रुता का बदला लेते हैं। स्थानीय प्रशासन के अनेक प्रयासों के बावजूद शराब की खपत बढ़ जाती है। नशे में डूबकर लोग अश्लील

व्यवहार करते भी देखे जाते हैं। जो पर्व आनन्द और उल्लास का था वह रंगबाजी, खीझ और दहशत का अवसर बनता जा रहा है।

होली कम या अधिक उत्साह के साथ सम्पूर्ण भारत में मनाई जाती है किन्तु ब्रज क्षेत्र की होली अद्वितीय है। क्षेत्र के पुरूष गोप और होरियारे तथा महिलाएँ, गोपियाँ एवं होरिहारिन बनकर द्वापर के कृष्ण और राधा के बीच खेली गई होली का स्वाँग भरते हैं। बरसाना जहाँ की राधा थी और नंदगाँव जहाँ के कृष्ण थे, के गावों की लट्ठमार होली के क्या कहने। इसे देखने के लिए देश के ही नहीं विदेश के पर्यटक भी आते हैं कवियों ने कृष्ण और वृषभानु कुमारी (राधा) जो अपने साथियों और सहेलियों के साथ हैं, के होली खेलने का मनोहारी दृश्य प्रस्तुत किया है। निम्नलिखित कविता का आप भी आनन्द लीजिए-

उतते कन्हाई लरिकाई के सखन लीन्हे,
करि चतुराई केलि होरी की मचाई है।
दूत वृषभानु की कुमारी सुकुमारी प्यारी,
आलीगण आली में रसाली सी सोहाई है।।
लालन गुलाबन की लालन पै डारै मूठि,
चलै पिचकारी सुखकारी दुहुँ धाई है।
केसर रंग साने सुरंगनेह सरसाने,
मानौ बरसाने बरसा में झरि लाई है।।

ब्रज की गलियाँ रंग प्रवाह के कारण रपटीली हो गई हैं। गोपी रपटीली गली से निकल रही हैं। पीछे से कृष्ण आ जाते हैं। दोनो रपट कर गिर जाते हैं। दोनों को दरस का ही नहीं परस (स्पर्श) का भी आनन्द मिल जाता है। पदमाकर लिखते हैं-

उधम ऐसो मचो ब्रज मों सब,
रंग तरंग उमंगन सीचैं।
दै पिचकारिन छज्जन छातिन,
ह्वै छवि छाजत केसरि सीचैं।।
त्यों पदमाकर हौंहु गई हुती,
पीछे गोपाल गुलाल उलाचैं।
एकहि संग जो मैं रपटी तहँ,
वे भये ऊपर मैं गई नीचैं।।

ब्रज की प्रत्येक गोरी/छोरी और गोपिका मोहन के साथ होली खेलने के लिए लालायित हैं। मोहन के साथ होली खेले बिना वह बेचैन हैं। निम्नलिखित सिंहावलोकन छन्द में गोपी की मनोदशा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है-

फागरी आयो सुहायो चहूँ दिशि,
गावत सुन्दरि सुन्दर राग री।
रागकी मेरो गयो हरि लै अब,
कासौ कहौं अपनो मे अभाग री।।
भागरी हू से छूटै न शरीर,
रहो इन बातन को उर दागरी।

दाग तो मेरो तबै मिटिहैं जब,
मोहन के संग खेलिहौं फागरी।।

गोपी गोविन्द को भीड़-भाड़ से हटाकर अलग ले जाता है। वह उन पर अबीर उड़ेल देती है, पीताम्बर छीन लेती है, गालों पर रोली और गुलाल लगा देती है और फिर मुस्कराते हुए गोविन्द से होली खेलने के लिए फिर आने को कहती है। गोपी की इन भाव भंगिमाओं का चित्रण कवि पदमाकर ने इस प्रकार किया है-

फाग के भीर अमीरन ते गहि,
गोविंदै लै गई भीतर गोरी।
भाय करी मन सी पदमाकर,
ऊपर नाय अबीर की झोरी।।
छीन पितम्बर कम्बर तो सो,
विदा दई मींजि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कस मुसुक्याय,
लता फिरि आइयो खेलन होरी।।

कृष्ण और राधा या गोप एवं गोपी के मध्य खेली जाने वाली होली पर आधुनिक कवियों ने भी लिखा है। इलाहाबाद वि.वि. के हिन्दी के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ0 जगदीश गुप्त (पुरानी और नई कविता के पुरोधा) के निम्नलिखित छन्द में गोप के द्वारा गोपी पर पिचकारी मारने, उसके अंग-प्रत्यंग के सराबोर होने तथा प्रीति चुराने और चीर निचोड़ने का दृश्य किस पाठक को रोमांचित्र नही करता -

मारि गयो पिचकारी अचानक,
थोरी शरीर पै थोरी हिये में।
भीगि गई सारी अँगिया,
रसधार वहीं बरजोरी हिए में।।
चोरति प्रीति निचारति चीर,
संकोचति सोंचति गोरी हिए में।
लाल अबीर, गुलाब कपोलनि,
नैननि में रंग होरी हिए में।।

जिन महिलाओं और युवतियों के पति/प्रियतम बाहर हैं उन्हें होली विरहाकुल कर देती है। वे नहीं चाहती हैं कि होली आए। चन्द्रशेखर मिश्र ने निम्नलिखित छन्द में किसी ऐसी ही विरह विदग्ध युवती के क्रिया कलापों का मार्मिक चित्रण किया है-

होरी गई यदि गोरी हमारी,
किसी को गुलाल उड़ाने न दूँगी।
कैद कराउँगी मंजरी को,
उफ ढोल पै थाप लगाने न दूँगी।
फूलने दूँगी नहीं सरसों कहीं,
कोयल को कुकुआने न दूँगी।
माघ को बाँध रखूँगी सिवान में,
गाँव में फागुन आने न दूँगी।।

लेखक की कामना है कि हम ईर्ष्या-द्वेष को जला दें। प्रेम के रंग से औरों को अभिसिंचित कर दें, माथे पर सदाशयता का अबीर लगा दें और पर दुःख कातरता का गुलाब लोगों के गालों पर मल दें। ❑

पता : 610/368 जी, केशवनगर,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020
मो0 : 9559419018

सहकारी फागुन

सब मिल अब आँचल रंग लो,
फागुन की नव बेला आई।
तुम क्या रूठी रंग रूठ गया,
तन क्या मन तक भी रूठ गया,
मधुऋतु का कोमल ह्रास गया।
फिर सुनों हास वह सखियों की,
'सहकार' बना टोली आई।
मत रूठो अब आँचल रंग लो,
फागुन की नव बेला आई।

ढोलक चंगों पर थाप पड़ी,
रिश्तों के ऊपर फाग चढ़ी,
पग में नुपुर की बाँध लड़ी,
सज रही ग्वालिनी उधर खड़ी।
तुम देखो नयन उठाकर फिर,
प्राची अरूणिम आभा लाई।
मत रूठो अब आँचल रंग लो,
फागुन की नव बेला आई।

क्यों रूठी घूंघट दूर करो,
मत भावों को मजबूर करो।
मैं ही हारा तुम मत हारो,
जीवन नव रंग में रंग डारो।
'सहकार' हास परिहास रास,
क्यों आज मानिनी बन आई।
मत रूठो अब आँचल रंग लो,
फागून की नव बेला आई।

प्रेम चन्द्र सैनी

फाग के गीत

'सहकारी, टोली, मतवाली, रंगों के त्योहार में,
गीत ध्वनित होते फागों के, हर-आँगन हर द्वार में।
'कृष्ण-राधिका के मुखड़ों पर, लाज भरी मुस्कान है,
अनजाने से बने परस्पर, मन में शुभ अरमान है,
निर्मोही से प्रीति लगा, मन अब क्यों विचलित होता,
कैसी होली बिना 'कन्हैया, सुध-बुध खोये प्राण है।
ढोल-मजीरे पायल खनके, झूमें-गाएं प्यार में,
गीत ध्वनित होते फागों के, हर आँगन हर द्वार में।
तन का आँचल उड़-उड़ सरके, मधुर पवन के जोर से,
उपवन भी स्वागत करता है, उड़ते खग-कुल शोर से।
प्राण मगन हो गए गगन में, सन्नाटे अब टूट गए,
बिना कृष्ण के कैसी होली, ढूँढे टोली भोर से।
मुँह-माँगा न नजराना देंगी, कहती भरी बहार में,
गीत ध्वनित होते फागों कें, हर आँगन हर द्वार में।
साँसों में उच्छवास प्राण में, कृष्ण-मिलन की प्यास है,
हर धड़कन में दर्दभरा है, मन की कली उदास है।
होली रहे न इनकी सूनी, उर-पीड़ी आवास है,
बोले कैसे जाने आया, फागों का यह मास है।
फसल सुहागिन सी लहराये, रंगों के त्योहार में,
गीत ध्वनित होते फागों के, हर आँगन हर द्वार में।

❑❑

570/1176, बसंत नीड़, गोपालपुरी,
आलमबाग, लखनऊ
मो0 : 9935872181

अंतरिम बजट और किसान

- डा. भागचंद्र जैन
प्राध्यापक (कृषि अर्थशास्त्र)
प्रचार अधिकारी

'कृषिरेव महालक्ष्मीः' अर्थात् कृषि ही सबसे बड़ी लक्ष्मी है। भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि कहलाती है। भारत विकासशील देश है। भारतीय अर्थव्यवस्था का संसार में पांचवा स्थान है। वर्ष 2023-24 में भारत की आर्थिक विकास दर 9.23 प्रतिशत होने का अनुमान लगाया गया हैं। वर्ष 2022-23 में खाद्यान का उत्पादन 32.35 करोड़ टन हुआ है। कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए वर्ष 2024-25 के अंतरिम बजट में विभिन्न सार्वजनिक निजी निवेश (Public Private Investment) को प्रोत्साहन, सभी कृषि जलवायु क्षेत्रों में नैनो डी.ए.पी. का विस्तार तिलहन में किसानों को आत्म-निर्भर बनाना, फसल बीमा, डेयरी तथा मत्स्य विकास, ई. राष्ट्रीय कृषि बाजार, डिजीटल तकनीक आदि।

खाद्यान उत्पादन 2022–23

फसल	(उत्पादन करोड़ टन)	फसल	(उत्पादन करोड़ टन)
खाद्यान्नु	32.35	मूंग	0.35
चावल	13.08	तिलहन	4.00
गेहूं	11.22	मूंगफली	1.01
मोटे अनाज	5.27	सोयाबीन	1.28
मक्का	3.46	सरसों, तोरिया	1.28
जौ	2.004	गन्ना	46.88 करोड़ टन
दलहन	2.78	कपास	3.37 करोड़ गांठे प्रति गांठ 170 कि.ग्रा.
चना	1.36	पटसन	1.00 करोड़ गांठे प्रति गांठ 180 कि.ग्रा.

भारत में लगभग 26 करोड़ किसान है। अंतरिम बजट में कृषि को प्राथमिकता देते हुये दो हजार करोड़ रूपये की वृद्धि की गई है। वर्श 2024-25 के बजट में कृषि का बजट 127 लाख करोड़ रूपये प्रस्तावित किया गया है।

● फसल कटाई के बाद नुकसान रोकने के प्रयास

उचित रखरखाव न होने से फसल कटाई के बाद किसानों की फसल को भारी क्षति होती है, जिसे रोकने के लिए बजट में प्रावधान किया गया है, जैसे-फसलो का खेत से खलिहान तक पहुंचाने, उसका भण्डारण करने, पूर्ति श्रृंखला, प्रसंस्करण, विपणन और ब्राण्ड बनाने के लिए निजी तथा सार्वजनिक निवेश को बढ़ावा दिया जाएगा। आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) तथा भण्डारण की पर्याप्त व्यवस्था न होने से प्रति वर्ष लगभग एक लाख करोड़ रूपये से अधिक मूल्य का अनाज तथा सब्जी बर्बाद हो जाती है। फसल कटाई के बाद भडारण के लिए सार्वजनिक निजी निवेश को बजट में बढ़ावा दिया गया है।

● नैनो डी.ए.पी. को बढ़ावा

विभिन्न फसलों में नैनो यूरिया के सफलता के बाद सभी कृषि जलवायु क्षेत्रों में नैनो डी.ए.पी. का उपयोग किया जाएगा।

बजट में उर्वरकों पर दिये जाने वाले अनुदान को घटा दिया गया है। गत वर्ष अनुदान की राशि 1.68 लाख करोड़ रूपये थी, जिसे अंतरिम बजट में 1.64 लाख करोड़ रूपये किया गया है। यूरिया अनुदान का बजट 7.5 प्रतिशत घटाया गया है।

● तिलहन में किसानों की आत्म-निर्भरता

भारत द्वारा अपनी जरूरत की 50 प्रतिषत तिलहन आयात की जाती है, इसलिए तिलहन में आत्म-निर्भर बनाने के लिए विशेष योजनाए चलायी जाएगी।

● फसल बीमा

कृषि जोखिम भरा व्यवसाय है, फसलों को प्राकृतिक आपदा, कीट-बीमारी आदि से क्षति पहुंचती है, जिसकी भरपायी के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न फसलों का बीमा किया जाता है। राष्ट्रीय कृषि बीमा योजना के अंतर्गत 4 करोड़ से अधिक किसानों को फसल बीमा का लाभ मिला है। फसल बीमा योजना का बजट 2.7 प्रतिशत घटाया गया है।

● दुग्ध विकास और मत्स्य पालन

अंतरिम बजट में दुग्ध विकास (Dairy) के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाया गया है, जिससे दुधारू पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकेगा। डेयरी विकास हेतु बजट में 7105 करोड़ रूपये का प्रावधान किया गया है।

नीली अर्थव्यवस्था के लिए जलवायु के अनुकूल कार्यो को बढ़ाना देने के लिए तटीय एक्वाकल्चर और समुद्री कृषि के लिए योजना शुरू की जाएगी। सीफुड निर्यात को बढ़ावा दिया जाएगा। इससे रोजगार के 55 लाख नए अवसर सृजित किए जाएंगे।

● ई-राष्ट्रीय कृषि बाजार

इलेक्ट्रानिक राष्ट्रीय कृषि बाजार (Electronic National Agriculture Market) अर्थात ई- नाम से 1361 कृषि उपज मण्डियों को जोड़ा गया, जिससे किसान अपनी उपज को कही भी ऑनलाइन बेच सके। ई-नाम द्वारा किसानों ने 3 लाख करोड़ रूपये का व्यापार किया है, जिसमें मध्यस्थों के बिना किसानों के खाते में रकम आयी।

● डिजिटल तकनीक

कृषि के लिए डिजिटल अवसंरचना विकसित की गई है, जिसके लिए डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर फॉर एग्रीकल्चर के अंतर्गत किसानों को मोबाईल पर उर्वरक बीज से लेकर, स्टार्ट-अप्स और बाजार की जानकारी मिलेगी।

अंतरिम बजट में किसानों, ग्रामीणों के लिए कृषि योजनाओं, कार्यक्रमों को उपयोगी बनाया गया है, जिनका लाभ लेकन किसान ग्रामीण पशुपालक, फल-सब्जी उत्पादक नये आयाम स्थापित कर सकते हैं। ❑

पता : इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय,
कृषि महाविद्यालय, रायपुर-492012

जय मां भारति

श्रीमती किरन कान्ती
प्रशासनिक अधिकारी, (कम्प्यू0सेल)
कार्यालय आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता,उ0प्र0,
लखनऊ।

सभी दिशाएं मधुपूरित है
लाल गगन और हरी धरा है।
भोर किरन जागी और बोली
उतर रही है किसकी डोली
जरी किनारा दुग्ध धवल है
ये किसका वत्सल आंचल है
कौन देवि सौम्यता मूर्त है
प्रकृति स्वयं पद रज विभूत है
बिखरे बिखरे से स्वर्ण केश हैं
गौर वर्ण और मृदुल वेष है।
वाणी में जिसकी ममता रिसती है
धरती जिस बल धीरज धरती है
ऋतु आयी है निर्मल पावस
ज्योति बिन्दु अंधियार अमावस
धरनी का आंचल अनुराग भरा
कौकिल भ्रमरों का राग भरा
कमलासन आसन कर शंख गहे
रग-रग में जीवन रंग दहे
पसरी धरती ले विविध रंग
छाये हैं कण-कण रति अनंग
हंस रथी वेदाष्ट विषारदि
जय मां भारति जय जय शारदि।

❑❑❑

पता :
304 पिंक सिटी कालोनी,
बुद्धेश्वर चौराहा, मोहान
रोड, लखनऊ।
मो0 : 7071553009

होली और ईद

होली औ ईद, साथ मना लीजिये जानम।
गुझियां सिवइयां संग में, खा लीजिये जानम।।

लड़ना फिजूल जानिये, मजहब के नाम पर।
रिश्ते पुराने फिर से, बना लीजिये जानम।।

आबो हवा में जहर है, बेहद घुला हुआ।
फिल्टर खुलुसे दिल पे, लगा लीजिये जानम।।

गरानी ने कमर तोड़ दी, जीना मुहाल है।
कुर्ते को छोड़ कुर्ती, सिला लीजिये जानम।।

महीने का बजट फेल है, चक्के हुए हैं जाम।
धक्का परेड गाड़ी, चला लीजिये जानम।।

बिछुड़ा हो अगर यार कोई, दिल लगा हुआ।
मौका सुनहरी देख, बुला लीजिये जानम।।

रिश्ता हो बरकरार, अहमद औ श्याम का।
दामन का सारा प्यार, लुटा दीजिये जानम।।

लगिये गले से ईद में, फिर डालिये गुलाल।
होली मिलाद संग में, गा लीजिए जानम।।

मिलना मिलाना रस्म है, मौका भी है उमेश।
दुश्मन को अपना यार, बना लीजि ये जानम।।

- उमेश शुक्ल
(विद्यावाचस्पति)

होली

जगे विश्वास मने होली, बनें सब खास मने होली।
मिटा के दूरियां मन की, रहें सब पास मने होली।।
पुरानी याद मने होली, मिलन की बात मने होली।
नया उत्साह जगे होली, मिटे अवसाद मने होली।।

खुशी के रंग मने होली, प्रीति के संग मने होली।
खायें बांट सभी गुझिया, निराले ढंग मने होली।।
बड़ों का मान मने होली, बढ़े सम्मान मने होली।
बड़ा न कोई हो छोटा, नहीं अपमान मने होली।।

हो अपनापन मने होली, उमंग के संग मने होली।
सुनो इस बार होली में, स्वच्छ तनमन मने होली।।
भुला के द्वेष और इर्ष्या, बहुत हुड़दंग मने होली।
कबीरा गान से होली, मृदंग और तान मने होली।।

❑❑❑

एफ-4358 राजाजी पुरम, लखनऊ-226017, मो.-9616135035

सृष्टि की जीवन–रेखा है नारी

नमिता वैश्य (शिक्षिका)

बहुत प्रचलित कहावत है कि -'एक पुरूष को शिक्षित करने पर एक व्यक्ति शिक्षित होता है परन्तु एक नारी के शिक्षित होने पर पूरा परिवार शिक्षित होने लगता है।' इस कहावत में समाज में नारी की अर्थवत्ता चिन्हित है।

इतिहास साक्षी है कि मानव सभ्यता के प्रारंभिक दिनों में प्रगति बहुत तेजी से हुई थी और सभ्यता के सभी अनिवार्य तत्वों का आविष्कार उसी समय हो गया था। आज इतिहास प्रमाणित करता है कि परिवार, कृषि और प्रारंभिक उपकरणों का आविष्कार करने का श्रेय नारी को ही जाता है। प्रकृति ने नारी को पुरूषों से भिन्न बनाया और उसे ही सर्जन-पोषण का दायित्व सौंपा। प्रकृति में जीवन की सततता का उपकरण है पुनरूत्पादन और यह प्रक्रिया पूरी होती है मादा के गर्भ में। सृजन में नारी-पुरूष की बराबर की भूमिका होती है पर यह प्रक्रिया पूरी होती है नारी में। करीब नौ महीने गर्भ में पोषण और फिर कई वर्ष तक बाहर दुनिया में। यह अजीब विडंबना है कि प्रकृति के जीवों में मनुष्य ही सबसे अधिक विकसित हो सर्वशक्तिमान होता जा रहा है पर सभी जीवों में सबसे निर्बल मानव की ही संतान होती है। अन्य जीवों के बच्चे कुछ दिनों में,कुछ के तो कुछ घंटों में चलने-फिरने, चुगने लगते हैं पर मानव शिशु कई वर्ष तक निर्भर रहता है।इस दौरान पोषण का मुख्य दायित्व मां अर्थात नारी पर ही होता है।

इसी कारण जब मनुष्य का जीवन शिकार और भोजन संग्रह पर निर्भर था तो शिशु के कारण नारी हमेशा पुरूष के साथ भोजन की तलाश में नहीं जा पाती होगी। उसी दौरान उसे 'अवकाश' मिलता होगा। आज यह सिद्ध हो चुका है कि सभ्यता के निर्माण में जितना योगदान श्रम का है उतना ही अवकाश का भी, क्योंकि नया-नया सोचने और करने के लिए अवकाश तो चाहिए ही। इसीलिए कहते हैं- नारी ने ही बीज से पौधे उगने को देखा-समझा होगा और उसे प्रयोग में लाने की कोशिश की होगी। फिर छोटे-मोटे उपकरण भी बनाये होंगे।

नारी ने ही अवकाश के क्षणों में 'सोचना' और जरूरतों को महसूस करना शुरू किया होगा।इस

तरह नारी के मन-मस्तिष्क में विविधता चरितार्थ होनी शुरू हुई होगी और फिर यह प्रमाणित ही है कि मनुष्य ने जिन अंगों का अधिकाधिक और लगातार उपयोग किया, उनका विकास होता गया और जिनका नहीं किया उनका क्षरण होता गया। ऐसे में सभ्यता के प्रारंभिक काल में नारी मन-मस्तिष्क का अधिक विकास हुआ हो यह स्वाभाविक है।

इस तरह प्रकृति ने ही मानव समाज के लिए नारी को मानो अधिक संभावना संपन्न बना रखा है। पर पुरूष अधिक कुशल और कुटिल साबित हुआ और उसने धीरे-धीरे घर, परिवार, सम्पत्ति और राज्य की ऐसी रचना कर डाली जिसमें पुरूष का वर्चस्व कायम होता गया और नारी गौण होती चली गई। पितृ सत्ता और रूढ़ि ग्रस्त श्रेणी ग्रस्तता ने नारी ही नहीं, बल्कि अधिकांश श्रमिक पुरूषों को भी द्वितीयक बना दिया। इससे मानव समाज की बहुत क्षति हुई और वह उन ऊंचाइयों को नहीं छू सका जहां तक पहुंच सकता था।

प्रारंभिक समय में 'मानव' समाज पुरूषों में भी अभिजनों तक केन्द्रित था किन्तु आधुनिक काल में मानव समाज के केंद्र में है। फिर धीरे-धीरे लोकतंत्र का प्रादुर्भाव हुआ। इससे भी जनतंत्र का थोड़ा ही विस्तार हुआ। अमरीकी क्रांति ने उद्घोषित किया- All men are created equals सभी लोग जन्मना बराबर हैं, पर यहां 'मेन' में 'विमेन' और अश्वेत मेन भी शामिल नहीं थे। फ्रांसीसी क्रांति में 'समानता', 'स्वतंत्रता' और 'भ्रातृत्व' की बात की गई पर इसमें भी नारियां शामिल नहीं थीं। यह स्थिति थी तथाकथित जनतांत्रिक देशों में अग्रणी समाजों की,तो भारत जैसे पिछड़ गए औपनिवेशिक देशों का तो कहना ही क्या।

बहरहाल जनतंत्र का रथ आगे ही बढ़ता गया और उन्नीसवीं सदी में नारियों की आवाज भी उठने लगी। प्रथम विश्व युद्ध में पुरूषों के युद्धरत हो जाने के कारण नारियों को अवसर मिलने लगा और अमरीका तथा यूरोप में नारी मुक्ति आंदोलन तेज होने लगा। बीसवीं सदी में नारी मुक्ति के संदर्भ में दो महिलाओं का योगदान ऐतिहासिक कहा जा सकता है -1. फ्रांस में सिमोन द बोवुआर तथा 2. रूस में अलेक्जांद्रा कोलोन्ताई।इन दोनों ने नारी जाति को हर तरह से मुक्त करने के लिए हर तरह के प्रयास किए और साबित कर दिया कि नारी को गौण समझा जाता है जबकि वह किसी भी तरह द्वितीयक नहीं है।

तब से नारियों ने जीवन के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और कौशल का परिचय देना शुरू कर दिया है। परन्तु पुरूष मानसिकता आज भी पूरी तरह उन्हें बराबरी का दर्जा देने को तैयार नहीं लगती। ऐसे में व्यवस्था में आमूल परिवर्तन के लिए तड़प रहे समाज को अगर यह अहसास हो जाये कि नारी सामाजिक परिवर्तन का एक प्रभावी कारक हो सकती है तो नारी और समाज की स्थिति में भारी परिवर्तन हो सकता है। अभी तक यह लगता है कि पुरूष अनुकम्पापूर्वक नारी को बराबर समझ रहा है। दूसरी ओर नारी भी थोड़े अधिकार पाकर कृतज्ञ महसूस करती है। यह सहज स्थिति नहीं है। अगर नारी की गुणवत्ता और विशिष्टता मान ली जाय तो सारे पूर्वाग्रह और कुंठाएं दूर हो सकती हैं और समाज में नारी और पुरूष के बीच सहज और सकारात्मक संबंध विकसित हो सकते हैं।

वैसे भी हम देख सकते हैं कि प्रकृत्या नारी पुरूष से अधिक सामाजिक होती है। नारी अधिक आसानी से संवाद स्थापित कर लेती है और उसका औरों के प्रति, घर-मोहल्ले के प्रति सहज सरोकार होता है। यानी वह प्रकृत्या अधिक 'आउट गोइंग' होती है। इस प्राकृतिक गुणवत्ता को यदि शिक्षा से संवार दिया जाय और उसकी सहज सामाजिकता को सोद्देश्य बना दिया जाय तो सोने में सुगंध जुड़ सकती है।

इसीलिए नारी का शिक्षित होना और उसे सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलनों में सक्रिय बनाना आवश्यक है। यह उजागर हो चुका है कि एक शिक्षित मां एक शिक्षक पिता से अधिक कारगर नागरिक होती है। हम देख सकते हैं कि जो भी

महिलाएं आज नागरिक अधिकार आंदोलन में सक्रिय हैं,वे लोगों को जागृत करने तथा उन्हें सामाजिक मुद्दों पर लामबंद करने में काफी सफल हैं। मेधा पाटकर, अरूणा राय, कविता श्रीवास्तव आदि आज सामाजिक समर्पण के लिए सम्पूर्ण देश में जानी जाती हैं।

ज्ञातव्य है कि आज के सामाजिक माहौल में पुरूष नेतृत्व ने जनता का भरोसा खो दिया है। आज नारी नेतृत्व अपेक्षतया अधिक विश्वसनीय और भरोसेमंद माना जाता है। ऐसे में केवल नेतृत्व को नहीं, सामान्य नारी को भी इस तरह शिक्षित-प्रशिक्षित किया जा सकता है कि वे अपने सामाजिक दायित्व को समझ कर उसके निर्वाह के लिए अपने को अच्छी तरह तैयार कर लें। हर घर समाज का एक मोर्चा होता है। अगर नारी अपने-अपने घर के मोर्चे को ही सम्हाल कर उसके रूपांतरण में जुट जाए तो धीरे-धीरे सारा समाज रूपांतरित हो सकता है। घर के बाद बारी आती है पड़ोस की। आज भी 'पड़ोस' मुख्यतः नारियों के दम पर ही जिंदा है। अगर सामाजिक चेतना से लैस नारी अपना कार्य क्षेत्र पड़ोस में भी बढ़ा दे तो क्या कहना। जो अधिक प्रबुद्ध और अनुभवी हैं वे अपने मोहल्ले या और बड़े क्षेत्र को अपना कार्य क्षेत्र बना सकती हैं।

अंत में यह मुद्दा विश्वास और आत्मविश्वास का है। समाज के अंदर विश्वास पैदा होना चाहिए कि नारी उतनी ही, या उससे भी अधिक संभावना सम्पन्न होती है जितना पुरूष और स्वयं नारियों में यह आत्मविश्वास पैदा होना चाहिए कि वे वह सब कर सकती हैं, कुछ मामलों में और अधिक, जितना पुरूष कर सकता है।

इस प्रकार नारी सृष्टि की जीवन-रेखा है तथा सामाजिक परिवर्तन की वाहक है। ❑

पता : मसकनवा, गोण्डा
उ.प्र.-271305
मो.-9997478210

जरूरतमंदों का पक्के मकान का सपना हो रहा साकार

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बताया कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विजन व दूरदर्शी सोच के तहत आवास विहीन/कच्चे/झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को ग्राम्य विकास विभाग द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण के तहत आवास उपलब्ध कराने का प्रयास तेजी से किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के निर्देशन में ग्राम्य विकास विभाग लगातार ग्रामीण अंचलों में विकास की गंगा को बहाने का कार्य कर रहा है। केंद्र व प्रदेश सरकार की सभी जन कल्याणकारी योजनाओं को विभाग गाँव के हर जरूरत मंद तक पहुंचाया जा रहा है। इस कड़ी में प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण के माध्यम से अब तक कुल प्राप्त लक्ष्य 3615041 आवासों के सापेक्ष 34 लाख से अधिक आवासों को पूर्ण कर लिया गया है, जो कि 96 प्रतिशत से अधिक है। वहीं वित्तीय वर्ष 2023-24 में एक लाख 44 हजार 220 आवास आवंटन के सापेक्ष 84 हजार आवास पूर्ण करा लिये गये हैं।

उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य द्वारा गांवों के चहुंमुखी व सर्वांगीण विकास के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। मनरेगा में 2023-24 में 28 करोड़ 68 लाख मानव दिवस सृजित करते हुए 75 लाख 24 हजार श्रमिकों को रोजगार प्रदान किया गया तथा 2024-25 में 33 करोड़ मानव दिवस सृजन किये जाने का लक्ष्य है। सरकार द्वारा अब तक 36 लाख 15 हजार आवास स्वीृति किए गए हैं, जिनमें 34 लाख से अधिक आवास पूर्ण हो गए हैं, शेष निर्माणाधीन हैं। योजना हेतु वित्तीय वर्ष 2024-25 में 2441 करोड़ की व्यवस्था की गयी है। मुख्यमंत्री आवास योजना ग्रामीण के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2018-19 से 2023-24 तक अद्यावधिक 02 लाख 03 हजार आवासों का निर्माण पूर्ण किया गया है। 2024-25 के लिए इस योजना मे 1140 करोड रूपए के बजट का प्राविधान किया गया है।

'लेखांकन साक्षरता'

— सीएमए गोविन्द शुक्ल

भारत में बड़ी संख्या में निरक्षर विद्यमान हैं। लोग पढ़ना लिखना नहीं जानते, हस्ताक्षर भी नहीं बना सकते। 'अंगूठा छाप' जनसंख्या भारतीय समाज पर भारी है। ऐसे में, जन सामान्य से नियम कानून तथा तकनीकी ज्ञान की आशा रखना व्यर्थ है। सरकार से या सरकारी तंत्र से अथवा सहायता प्राप्त संस्थाओं की ओर से कोई विशेष प्रयास नहीं हुआ। गैर सरकारी संस्थानों तथा सामाजिक संस्थाओं को भी सफलता नहीं मिली। इस पर कुछ कहना कठिन है। लेकिन, संभवतः इच्छाशक्ति का अभाव रहा होगा। यह कहना अनुचित न होगा कि निरक्षरता को हटाने के कार्यक्रम को कभी गंभीरता से नहीं लिया गया। देश के सर्वांगीण विकास का सपना तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक कि निरक्षरता उन्मूलन का कार्य सफल नहीं होगा। इसलिए साक्षरता को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी।

अक्षर ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है बल्कि, नागरिक बोध भी अनिवार्य है। नागरिक होना क्या है, देश क्या है, देश हित क्या है, देश प्रेम क्या है- इन बातों को भी ध्यान में लाना चाहिए। यदि, इन बातों का ज्ञान नहीं होगा, तो देश किधर जायेगा- यह बताना कठिन होगा। इसलिए, अक्षर ज्ञान व नागरिक बोध को एक साथ चलना चाहिए। इन सब के बाद एक बहुत बड़ी विसंगति समाज के साथ जुड़ी है। पढ़े लिखे लोग भी अपने आय व्यय या आर्थिक आदान प्रदान का विवरण नहीं रख पाते हैं। इस तरह पढ़े लिखे युवा भी जीवन में आगे नहीं बढ़ पाते। हिसाब किताब न रख पाने के कारण अधिसंख्य लोग आर्थिक जीवन को निभा नहीं पाते। इस कारण उनका सामाजिक जीवन भी अस्त व्यस्त रहता है। आर्थिक सोच और आर्थिक योजना के बिना प्रगति नहीं हो सकती, चाहे कोई व्यक्ति हो या संगठन हो।

वर्तमान काल में बाजार और लाभ हानि की दशायें अति जटिल होती जा रही हैं। दूसरी ओर डिजिटल व्यवहार के कारण अनभिज्ञों की समस्याएं तथा अनियमित व्यवसाय को प्रोत्साहन मिल रहा है। इसलिए पढ़े लिखे लोगों को लेखांकन साक्षरता (एकाउंटिंग लिटेरेसी) से दो चार होना पड़ेगा। उन्हें न्यूनतम लेखा कर्म का अभ्यास रखना चाहिए। लेखांकन का तात्पर्य सभी आर्थिक व्यवहारों का ठीक ठीक अंकन है, नियमानुसार सभी वित्तीय सूचनाओं का रखरखाव। मेरा आशय उन तमाम कम पढ़े लिखे लोगों से है,जो अपना हिसाब रखने की क्षमता नहीं रखते, या उनकी आदत में ऐसा नहीं है। इससे उन्हें पर्याप्त क्षति उठानी पड़ते है। वे अनेक लेनदारी व देनदारी भूलते होंगे। वे ठीक ठीक वित्तीय व्यवहार का आंकलन भी नहीं कर पाते होंगे। इससे जीवन में वित्तीय अनुशासन नहीं रह सकता, जो आति आवश्यक है। अनेक बार पढ़े लिखा लोग भी कपने स्वास्थ्य का हिसाब नहीं रख पाते,जो कि गलत आदत है। इसलिए कोई भी हो,पढ़ा लिखा या गैर पढ़ा लिखा,सभी अपने घर की वित्तीय स्थिति का छोटे से छोटा हिसाब किताब रखने का अभ्यास कर सकते हैं, इसमें विशेष कठिनाई नहीं है। मन बना लें, तो लेखा जोखा रखना सरल

हो जायेगा।

अमीर गरीब की बात है ही नहीं। सभी को अपने घर का हिसाब ज्ञात रखना चाहिए, क्योंकि सभी का कोई न कोई आर्थिक जीवन अवश्य होता है। तो वित्तीय आंकड़ों को लिखना बड़ी जिम्मेदारी है। इससे जीवन में अच्छा अनुभव और परिणाम मिलेगा। थोड़ा सा समय निकाल कर इसे लिखना चाहिए। यह भी नागरिक पहिचान का अंश है,लाभदायी प्रवृत्ति है। आज के आर्थिक युग में जीवन शैली दिन प्रतिदिन बदल रही है,ऐसे में आय व्यय की मर्यादा सुरक्षित रखनी पड़ेगी। दिनभर में अनेक लेनदेन को स्मरण में नहीं रखा जा सकता। किस मद में क्या आया,क्या गया-इसका संयत लेखांकन करना अति उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह अनिवार्य होना चाहिए, जिससे उचित या अनुचित लेन देन की भी समीक्षा हो सकती है। इसके अतिरिक्त टैक्स आदि के भुगतना का विवरण अंकित होगा। ये विभिन्न छोटे बड़े वित्तीय आंकड़े हर एक व्यक्ति के जीवन को समझने और उसे सुधारने में काम आ सकते हैं।

लेखांकन कार्य केवल बड़े प्रतिष्ठानों भर के लिए नहीं है। यह प्रत्येक नागरिक, चाहे वह शहरी हो या ग्रामीण हो,के लिए हितबद्ध है। यह बिल्कुल सुगम उपाय है, जिससे जीवन में बचत का रास्ता निकल सकता है। विनियोग व निवेश का मार्ग खुल सकता है। लोग अपनी आर्थिक स्थिति को सही सही समझ सकते हैं। लेखांकन से एक अच्छी पद्धति का श्रीगणेश होता है। एक आदमी को देख कर दूसरा भी प्रोत्साहित होता है। धन के प्रबंधन का यह बिल्कुल सहज उपाय है। थोड़ा सा सीखने भर से अच्छा अभ्यास किया जा सकता है। जागरूकता बढ़ती है, दृष्टिकोण में परिवर्तन होता है। एक निश्चित सिस्टम का पालन सब को अनिवार्य होगा। तो,तनिक समझदारी की अतीव आवश्यकता है-एकाउंटिंग को दैनिक कार्य कलापों के लिए लागू करना। नित थोड़ा थोड़ा सीखने से बहस कुछ ज्ञान हो सकता है।

एक कहानी सुनाऊंगा, सच्ची कहानी। मेरे बाबा थे, दादा जी। वे कानपुर में महापालिका के स्कूल के अध्यापक थे। पुराने जमाने की बात है। तब स्कूल के अध्यापक को पर्याप्त वेतन नहीं मिलता था। सो,चौक के पास किराए के छोटे से मकान में रहते थे। पांच सदस्यों का परिवार था। कठिन दिन थे, गुजारा जैसे तैसे होता था। वे सादे पन्नों को धागे से सिल कर छोटी सी डायरी बनाते थे। उसमें नित्य तिथिवार दिनभर के व्यय का विवरण लिखते थे। दृष्टांत/13 जुलाई,1961 को -एक सेर आलू-10 नये पैसे, आधा सेर टमाटर-5 नये पैसे, पाव भर मटर-8 पैसे, मूली-2 पैसे, आटा पिसाई-3 पैसे, दूध-15 पैसे, कापी-85 पैसे, कोयला-तीन रूपये। कुल योग=4 रूपये 28 पैसे। बाकी कितने बचे, उसे जेब से निकाल कर गिनते थे। यह क्रम वर्षों तक चलता रहा। इस तरह पुराने समय में भी तमाम लोगों को लेखांकन के महत्व का निकट अनुभव था। बहुतेरे लोग डायरी लिखते थे,उसमें तो वे दिनभर की सभी बातों का उल्लेख करते थे। इस डायरी को तथ्यात्मक दस्तावेज माना गया है,जिसे समय समय पर कानून ने भी मान्यता दी है। इसलिए सभ्यता की पहिचान है,कि आवश्यक बातों को लिपिबद्ध किया जाय। इनमें, लेखांकन तो अनिवार्य सा प्रतीत होता है।

गांवों में किसान या मजदूर इस लेखांकन की बात पर हंसेंगे। क्योंकि उनके पास समय ही नहीं होता है,कुछ भी लिखने पढ़ने के लिए। और यदि है भी,तो इसे वे व्यर्थ की क्रिया समझेंगे। अर्थात, समझाने से भी वे इसके महत्व को नहीं समझने वाले हैं। देहात में जड़ता का घनत्व पहले जैसा अभी भी है। इसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। लेखांकन की बात को वे इतनी शीघ्रता से स्वीकार नहीं करेंगे। ग्रामीणों का मानना है कि लेखांकन तो शहरी लोगों के लिए है,उनके लिए यह निरर्थक चेष्टा होगी। सो,

यह बात बिल्कुल सच है कि पहले शहरी लोग इसे अपनायें। लेखांकन को किसी भी रूप में सकारा जा सकता है। लेकिन इसके प्रभाव के बारे में ग्रामवासियों को बताना होगा। शनैः शनैः लोगों की समझ में अवश्य आने लगेगा। शुरूआत शहरों से करनी पढ़ेगी,वह भी पढ़ लिखे लोगों के बीच से। हिसाब रखना अपने ही हित में है, दूसरे के हित में नहीं। यदि लेखांकन साक्षरता ने परिपक्व आधार तैयार कर लिया, तो इसे एक प्राथमिक अभिलेख माना जायेगा।

लेखांकन साक्षरता की स्वीकार्यता को कैसे जनप्रिय बनाया जा सकता है, यह कठिन प्रश्न है। लोगों तक सही संदेश पंहुचाना, एक श्रमसाध्य कार्य है। इसमें सभी का योगदान हो,तभी सफलता मिलेगी। सरकार की सहायता के बिना इसकी सफलता संदिग्ध है। फिर भी, सामाजिक कार्यकर्ता और स्वयंसेवक अपने अपने जागरूकता कार्यक्रम में इसे सम्मिलित कर सकते हैं। लागत लेखाकार होने के नाते मैंने स्वयं 'लेखांकन साक्षरता' का अभियान आरम्भ किया है। परन्तु, इसमें अभी तक गति नहीं आ पायी है। यह कार्यक्रम ठहर सा गया है। मैं निराश नहीं हूं। लोगों को बताना, समझाना और उनका हित करना अच्छा लगता है। कर्म भी धर्म है,कर्तव्य का मर्म है। व्यक्ति का हित समाज का हित है,और समाज का हित देश का हित है। सभी नागरिकों को देश के लिए सोचना चाहिए, करना चाहिए।

मेरा विचार है कि 'लेखांकन साक्षरता' से राष्ट्र सशक्त होगा। आम जनता में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व की प्रतिबद्धता आयेगी। इससे भ्रष्टाचार में कमी होगी, सुचारिता आयेगी। जीवन में वचनबद्धता और निश्चयात्मकता का बोध होगा। भारत का जन मानस वास्तविकता और सत्यता की ओर बढ़ेगा। लोगो में आत्मविश्वास बढ़ेगा,अपने को परखने का अवसर मिलेगा। 'अपना हिसाब, अपने पास' यह इस कार्यक्रम का दर्शन है। यदि आप अपना हिसाब स्वयं नहीं रखेंगे,तो दूसरे लोग आपका हिसाब रखेंगे-जो गलत है। न्यूनतम लेखांकन का सिद्धांत अपनाया जाय। इसके लाभ जनता को मिलेंगे,और सरकार को भी।

आज के जीवन में,जहां भागदौड़ आपाधापी और टेक्नोलाजी का प्रयोग है,वहां हिसाब किताब का रखरखाव अति आवश्यक हो गया है। हिसाब किताब का मतलब है, हिसाब की किताब। रिकार्ड रखना,अभिलेख बनाना। औपचारिक न सही,अनौपचारिक ही सही। रिकर्ड के रूप में रफ टफ डायरी ही सही। हालांकि, डायरी का पृथक विषय महत्वपूर्ण है। एक सरलीकृत लेखा प्रणाली को अपनाना ही होगा। विशेषरूप से उन सभी लोगों के लिए अनिवार्य होगा,जो आर्थिक संयम से प्रगतिशील समाज का अंग बनना चाहते हैं।

लेखांकन साक्षरता को सफल बनाया जा सकता है, यदि आपस में एक दूसरे को सीखने सिखाने का दायित्व निभाया जाय। जानकार लोग गैर जानकारों को लेखांकन का सरल प्रारूप साझा कर सकते हैं। न्यूनतम लेखांकन का सहज व सरल उपाय बताया जाय। मोटा मोटा हिसाब रखने की आदत को नित्य जीवन में सम्मिलित किया जाय। 'यह कठिन है' ऐसी सोच गलत है। 'इससे क्या लाभ' या 'यह बेकार है' ऐसे विचार उन्नति में बाधक हैं। इसलिए,लोगों को लेखांकन का समुचित लाभ अवश्य बताया जाय, समझाया जाय, संप्रेषित किया जाय। एक दिन आयेगा, कि सभी के लिए लेखांकन का थोड़ा बहुत ज्ञान आवश्यक हो जायेगा। तो,अपनी तरह से ही सही, उसका प्रयास आरम्भ हो। 'फ्री एकाउंटिंग' का यही मतलब है, एकाउंटिंग सेंस। ❑

(लेखक लागत लेखाकार और वाणिज्य विभाग, वी.एस.एस.डी.कालेज, कानपुर के शोध छात्र हैं।)

पता : 1/53, विनयखण्ड गोमतीनगर,
लखनऊ-226010

महिला सशक्तीकरण के आलोक में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

- गौरी शंकर वैश्य विनम्र
पूर्व सीनियर पोस्ट मास्टर,
डाक विभाग

भारतीय संस्कृति में नारी का स्थान सदैव सम्मानजनक रहा है। वैदिक काल में अखण्ड भारत विदुषी नारियों के लिए जाना जाता था। प्राचीन धर्मग्रंथ मनुस्मृति में श्यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवताश सूत्रवाक्य द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि जहाँ नारी पूजनीय होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। हमारे देश भारत में लक्ष्मी, सीता, दुर्गा, पार्वती के रूप में नारी को देवीतुल्य बताया गया है। कालांतर में नारी की स्थिति में ह्रास हुआ और मध्यकाल आते-आते यह ह्रास अपने चरम पर जा पहुंचा। ब्रिटिशकाल में भी नारी की स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ, जिसका प्रमुख कारण रहा, हमारी पुरूष प्रधान मानसिकता। नारी के प्रति इस कुत्सित सोच के कारण, वह पुरूष के शोषण और उत्पीड़न का शिकार बनी। यह रवैया लगभग समस्त विश्व में देखा गया, जिसके कारण महिला सशक्तीकरण की आवश्यकता महसूस हुई। 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' का शुभारंभ इसी दिशा में एक सशक्त प्रयास है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का इतिहास

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस प्रतिवर्ष 8 मार्च को मनाया जाता है। यह विशेष दिन अलग - अलग क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं का सम्मान करने और उनकी उपलब्धियों का उत्सव मनाने का है। सर्वप्रथम यह दिन अमेरिका में सोशलिस्ट पार्टी के आवाहन पर 28 फरवरी 1909 को मनाया गया। यह दिवस लीसिसट्राटा नामक उस महान महिला की स्मृति में, जिसने प्राचीन ग्रीस (यूनान) में फ्रैंच आंदोलन का प्रारंभ किया था, मनाया जाता है। बाद में यह

फरवरी महीने के अंतिम रविवार को आयोजित किया जाने लगा। चूँकि पहले अधिकतर देशों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार नहीं था, इसलिए उन्हें यह अधिकार दिलाने के उद्देश्य से 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल कोपेनहेगेन सम्मेलन में महिला दिवस को अन्तर्राष्ट्रीय दर्जा दिया गया। इस दिवस की महत्ता तब और बढ़ गई, जब 1917 में फरवरी के अंतिम रविवार को रूस में महिलाओं ने 'रोटी' और 'कपड़े' के लिए हड़ताल की। रूस के तानाशाह जार ने सत्ता छोड़ी और बोल्शेविक क्रांति के बाद सत्ता में आई अंतरिम सरकार ने महिलाओं को वोट देने का अधिकार दिया। उस समय तत्कालीन रूस में 'जूलियन' कैलेंडर का प्रचलन था, जबकि शेष विश्व में 'ग्रेगेरियन कैलेंडर' प्रचलित था। दोनों कैलेंडरों की तारीखों में भी भिन्नता थी। जूलियन कैलेंडर के अनुसार 1917 ईस्वी में फरवरी महीने का अंतिम रविवार 23 फरवरी को था, जबकि ग्रेगेरियन कैलेंडर के अनुसार, वह दिन 8 मार्च था। बाद में और वर्तमान समय में पूरे विश्व में (रूस में भी) ग्रेगेरियन कैलेंडर प्रचलित होने के कारण 8 मार्च को ही 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

महिला सशक्तीकरण की दिशा में किए जा रहे प्रयास

महिलाओं के प्रति सामाजिक सोच और संस्कृति में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए, भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति को ऊँचा उठाने के लिए कई प्रभावकारी कदम उठाए गए। संविधान के अनुच्छेद 15 (1) के अंतर्गत 'लिंग' के आधार पर भेदभाव को प्रतिबंधित करने के साथ-साथ अनुच्छेद 15 (2)के अंतर्गत महिलाओं एवं बच्चों के लिए अलग नियम बनाने की भी अनुमति प्रदान की तथा 73 वें तथा 74 वें संविधान संशोधन द्वारा संविधान के अनुच्छेद 243(डी)एवं 243(टी) के अंतर्गत पंचायती राज संस्थाओं एवं स्थानीय निकायों के सदस्यों और उनके प्रमुखों की एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित कीं।

महिला सशक्तीकरण के संदर्भ में आजकल 'जेण्डर' और 'सेक्स' को निहित अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है कि 'सेक्स' का संबंध भौतिक या शारीरिक विशेषताओं से है, जबकि 'जेण्डर' का संबंध मानसिकता से है। वस्तुतः सेक्स का निर्धारण गुणसूत्र (क्रोमोजोम्स) करते हैं, जिस पर किसी का नियंत्रण नहीं, जबकि जेण्डर का निर्धारण समाज करता है अर्थात बालक के मन में बचपन से ही बात बिठा दी जाती है कि वह स्त्री है या पुरूष। स्त्री मुक्ति आंदोलन 'नारीवाद' इसी मानसिकता का विरोध करता है।

महिला आरक्षण विधेयक

भारत में महिला आरक्षण विधेयक वर्ष 1996 से पारित करने के प्रयास किए गए किंतु अनेक अड़चनों के कारण लगभग 27 वर्षों तक लंबित रहा। हाल में लोकसभा और राज्यसभा, दोनों में महिला आरक्षण विधेयक 2023 अर्थात नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर दिया गया। यह विधेयक लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा में महिलाओं के लिए एक तिहाई सीटें आरक्षित करता है। ज्ञातव्य है कि संयुक्त राष्ट्र महिला आंकड़ों के अनुसार अभी तक रवांडा, क्यूबा और निकारागुआ महिला प्रतिनिधित्व में शीर्ष पर हैं।

राष्ट्रीय बालिका दिवस

8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है, जबकि 9 दिसंबर को भारत में 'राष्ट्रीय बालिका दिवस' घोषित किया गया है। वर्ष 1975 में अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष, वर्ष 1990 को 'सार्क' बालिका वर्ष, 1975 से 1985 संयुक्त राष्ट्र महिला दशक और 1990 - 2000 सार्क बालिका दशक मनाया गया। 31 जनवरी, 1992 को 'राष्ट्रीय महिला आयोग' का गठन किया गया, जो महिलाओं के सांविधानिक तथा कानूनी सुरक्षा के अधिकारों को ठीक ढंग से लागू करता है।

पैतृक संपत्ति में बेटे के समान बेटी का अधिकार

9 सितंबर, 2005 को पैतृक संपत्ति में बेटे के

समान बेटी को अधिकार देने वाला हिंदू उत्तराधिकार कानून सरकारी अधिसूचना के साथ प्रभावी हो गया।

घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण

'घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005' 26 अक्टूबर, 2006 से लागू हो गया। इसके अंतर्गत महिलाओं के विरूद्ध हिंसा को दण्डनीय अपराध के साथ-साथ गैर-जमानती माना गया है। अपराधी को 1 वर्ष की जेल या 20,000 रूपए का दण्ड या दोनों हो सकते हैं।

भारत सरकार ने मुस्लिम महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए अगस्त, 2019 में तीन तलाक को प्रतिबंधित कर दिया।

वंदनीय है नारी शक्ति वंदन अधिनियम

महिला-पुरूष समानता को बढ़ावा देने और महिलाओं को सशक्त करने की दिशा में नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 एक ऐतिहासिक कदम है, जो भारत में नए युग का सूत्रपात है।

सरकार की व्यापक नीतियों और लक्षित पहलों ने, शिक्षा और आर्थिक अवसरों के माध्यम से महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक योजनाएं चालू की हैं। इनमें 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'पोषण अभियान', 'उज्ज्वला योजना', 'सुकन्या समृद्धि योजना', 'महिला सम्मान बचत प्रमाणपत्र' आदि प्रमुख योजनाओं के माध्यम से आज भारत की महिलाओं में सशक्तीकरण की एक नई भावना का संचार हुआ है।

महिला शक्तिसंपन्नकरण से जुड़ी चुनौतियां

भारत में महिलाओं के विकास में बाधक तत्व हमारी रूढ़ियाँ और परंपराएँ हैं। समाज में व्याप्त कुप्रवत्तियों के कारण लड़कियों का जन्म अशुभ माना जाता है। कुछ समुदायों में उन्हें पैदा होते ही मार दिया जाता है। भारत में घटता लिंगानुपात 'बालिका भ्रूण हत्या' की ओर संकेत करता है। इसके लिए आधुनिक चिकित्सा-प्रौद्योगिकी के अनुचित प्रयोग यथा-अल्ट्रासाउंड, अमीनोसेंटोसिस आदि पर प्रतिबंध लगना चाहिए और इसके लिए कठोर दंड का विधान हो। लैंगिक भेदभाव के कारण लड़कियों को लड़कों की तुलना में कम पौष्टिक आहार मिलता है और लालन-पालन में भी पक्षपात किया जाता है। सामाजिक कुरीतियाँ बाल विवाह, दहेज प्रथा, बंधुआ मजदूरी, नशाखोरी, यौन हिंसा, असुरक्षा आदि के प्रभाव से महिलाएँ सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक दृष्टि से दबी रहती हैं। उत्तरदायित्व के संस्कार माँ अपनी बच्ची को बाल्यावस्था से ही प्रदान करती है। फलतः बालिकाएं शिक्षा और अन्य विकास के आयामों से वंचित होती रहती हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए सार्थक प्रयास किए जाने चाहिए।

महिला सशक्तीकरण का संपूर्ण लक्ष्य प्राप्त करने के लिए ध्यान देना होगा कि देश में सुदूरवर्ती ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्र अभी अनछुए हैं। नारी शक्ति वंदन योजना की पूर्ण सफलता हेतु हमें देश की एक-एक नारी को न केवल शिक्षित, अपितु उसे सम्मानजनक स्थिति तक लाना है। इसके लिए आवश्यक है कि महिलाओं को जागरूक करना होगा कि केवल शक्ति और अधिकार ही उनकी मदद नहीं कर सकते, अपितु स्वयं को सशक्त बनाने के लिए स्वयं भी कमर कसनी होगी। ❑

पता : 117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष 09956087585

दिन प्रतिदिन बढ़ता साइबर क्राइम

(शोध आलेख)

● मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

आधुनिक समय में हमें जो सुख -सुविधाएं प्राप्त हैं। उनमें इंटरनेट का बड़ा योगदान है। परंतु सुख के पीछे -पीछे दुख भी चला आता है। इंटरनेट की सुख-सुविधाओं के पीछे साइबर क्राइम रूपी दुख भी मानव जीवन में मानव द्वारा निर्मित एक बड़ी समस्या पैदा हो गई है। बात करते हैं साइबर अपराध की। साइबर अपराध होता क्या है? वस्तुतरू कोई भी अपराध जिसमें कंप्यूटर या नेटवर्क या हार्डवेयर का प्रयोग करके समाज विरूद्ध, राष्ट्र विरूद्ध, आर्थिक, सामाजिक हानि पहुंचाई जाती है। मनुष्य द्वारा मनुष्य के साथ कंप्यूटर डाटा, कंप्यूटर या अन्य कंप्यूटराइज्ड उपकरणों द्वारा धोखाधड़ी साइबर क्राइम का हिस्सा हैं। वायरस अटैक, हैकिंग द्वारा उक्त कृत्यों को किया जाता है। कानूनन यह साइबर क्राइम है।

साइबर अपराध भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। जैसे- फिशिंग, विशिंग, स्मिशिंग, स्पीयर फिशिंग, सोशल इंजीनियरिंग, स्पूफिंग, फार्मिंग, मालवर्टाइजिंग, एडवेयर, क्रास साइट स्क्रिप्टिंग अटैक, स्टेगनोग्राफी, व्हेलिंग, रैनसमवेयर, की लागर, जूस जैंकिंग, सिम क्लोनिंग और सिम स्वैपिंग आदि।

गूगल पर इस संबंध में उपयोगी जानकारी मिल जाती है। आज के समय में प्रत्येक जन को साइबर क्राइम के संबंध में जानकारी होना अति आवश्यक है, क्योंकि आधुनिक युग इंटरनेट का युग है। मानवजाति का प्रत्येक कार्य इंटरनेट के माध्यम से ही हो रहा है। कोई भी इंसान इंटरनेट से अछूता नहीं है। प्रत्येक मनुष्य के जीवन में इंटरनेट किसी न किसी रूप में हर क्षण एक अति आवश्यक भूमिका निभा रहा होता है।

आज के समय में प्रत्येक मनुष्य के पास इंटरनेट से संबंधित उपकरण होते हैं और ऐसे उपकरण अति आवश्यक भी मानवीय जीवन में हो गये हैं। इनके बगैर मनुष्य जीवन अधूरा लगता है। स्मार्टफोन, लैपटाप व अन्य कंप्यूटराइज्ड उपकरण मनुष्य जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं। जिनकी सुरक्षा व देखभाल भी अति आवश्यक है। जैसे अध्यात्म की दुनिया में देवीय मंत्र उपयोगी होता है और मोक्ष का द्वार खोलता है, ठीक वैसे ही पासवर्ड मंत्र इंटरनेट के विभिन्न प्लेटफार्मों का द्वार खोलता है।

कई बार कुछ फोन काल से भी विशिंग हो सकता है। मैसेज से भी हो सकता है। वाईफाई से भी हो सकता है। क्यू आर कोड से भी हो सकता है।

फर्जी फोन काल से साइबर अपराधी भोले भाले लोगों को मोबाइल टावर, लोन या फिर अन्य कोई काम धंधा जो घर बैठे कर सको और लाखों रूपए कमाओ का लालच देते हैं। कुछ कामी पुरूष बाडी मसाज, लड़की देसी-विदेशी से सेक्स के नाम पर ठगे जाते हैं। ऐसे साइबर अपराधी हैलो गैंग के नाम से प्रचलित हैं।

सोशल मीडिया का जमाना है, लुभावने विज्ञापनों से बचें। सोशल मीडिया सतर्क होकर इस्तेमाल करें। आप सतर्क रहेंगे तो इंटरनेट का भरपूर आनंद उठा पायेंगे। ओटीपी किसी भी अनजान व्यक्ति को न दें। सतर्क रहिए-सुरक्षित रहिए...!

संदर्भः- 1- प्रयास पत्रिका, अंक -1 (अप्रैल-जून 2022),
2- गूगल सर्च इंजन,

❑❑❑

पता : ग्राम रिहावली डाक तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा 283111
मो. 9627912535

जल, जीव और जीवन

- **श्रीमती राजश्री दुबे,**
समीक्षा अधिकारी (लेखा)
उत्तर प्रदेश शासन/ संयुक्त सचिव,
उत्तर प्रदेश सचिवालय संघ।

नदी, मानव और पशु-पक्षियों का सृष्टि के आरम्भ से ही घनिष्ठ नाता रहा है क्योंकि जीवों की उत्पत्ति और पालन का सम्पूर्ण चक्र जल के आस-पास ही घूमता है। यहां तक कि पृथ्वी पर प्रथम जीव की उत्पत्ति भी जल में ही हुई थी। जब हम भारतीय संस्कृति की बात करते हैं तो यहां नदियों को देवीतुल्य मानते हुए उनकी पूजा का विधान है, तो वहीं समुद्र को देव माना गया है।

किंतु आज के परिदृश्य में जब हम नदियों की दुर्दशा देखते हैं तो मन व्यथित हो जाता है। मानव जाति ने नदियों को न केवल दूषित किया है बल्कि उसमें पलने वाले असंख्य जीवों की हत्या का कारण बनकर प्रकृति का हत्यारा बन गया है। हम सभी ने बचपन में 'मछली जल की रानी है' कविता पढ़ी है, किन्तु आज हमने नदियों की इस प्रकार दुर्दशा कर दी है, कि वो मछली भी रो कर कह रही है 'मुझे जल की रानी मत बनाओ। एक साधारण जीव ही रहने दो जो शुद्ध जल के बातावरण में श्वास ले सके।'

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार अयोध्या के इक्ष्वाकु वंश के राजा भगीरथ ने कठोर तपस्या की तब जाकर माँ गंगा धरती पर अवतरित हुई। तभी से माँ गंगा अपनी अविरल धारा से हम सब का पालन-पोषण करती आ रही हैं। किन्तु आज गंगा की अविरल धारा इतनी प्रदूषित हो गयीं है कि केवल गोमुख से हरिद्वार तक ही माँ रह गई है। उसके बाद केवल एक प्रदूषित नदी। इसका सबसे बड़ा कारण शहरीकरण और हमारी उपभोक्तावादी संस्कृति के फलस्वरूप नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट एवं सीवरेज का अनियोजित एवं अप्रबन्धित प्रवाह है। प्रदेश की औद्योगिक नगरी कानपुर में गंगा

सबसे अधिक प्रदूषित है। गंगा ही नहीं प्रदेश की कई अन्य नदियां जैसे यमुना, गोमती, वरूणा, काली, हिंडन एवं सई में भी प्रदूषण सामान्य से से अधिक पाया गया है।

ये तो हम सभी जानते हैं कि जब कोई नदी अपने उदगम से गंतव्य की ओर जाती है तो रास्ते में जंगलों से होकर भी गुजरती है। किन्तु नदी अगर प्रदूषित हो तो एक भयावह चित्र प्रस्तुत करती है और इस चित्र में नदी का पानी पीकर कुछ बीमार तो कुछ मरे हुए मासूम जानवर व जीव दिखायी पड़ते हैं।

केवल नदियाँ ही नहीं मानव ने तो अथाह जल के स्वामी समुद्र को भी नहीं छोड़ा ।समुद्री जल तक को दूषित कर रखा है। रोचक तथ्य तो ये है कि वायुमंडल में आक्सीजन का सबसे बड़ा भाग अर्थात 50 से 80 प्रतिशत तक समुद्री पौधों और शैवालों से मिलता है। ये पौधे और जलीय जीव ही सागर व महासागरों का पारिस्थिकी तंत्र स्वस्थ और संतुलित बनाते बनाते हैं। किन्तु तेल एवं प्लास्टिक प्रदूषण समुद्री जैवविविधता को हानि पहुंचा रहे है। तेल के घटक समुद्री जीवों के लिए विषाक्त होते हैं और उनके जीवन का अंत करते हैं। साथ ही समुद्री पौधे एवं महत्वपूर्ण प्रवाल भित्तियों आदि को भी नुकसान पहुँचाते हैं। रही बात प्लास्टिक की तो प्लास्टिक के कचरे को मछलियां, कछुए इत्यादि अपना शिकार समझकर खा लेते हैं जिससे उनके पेट में प्लास्टिक भर जाता है। ये प्लास्टिक उनके जीवन के लिए घातक सिद्ध होता है ।

समुद्र मंथन के समय भी पहले हलाहल विष निकला फिर उसके बाद चौदह रत्न। किन्तु, क्या किसी मनुष्य में इतनी सामर्थ्य है कि वह शिव जी की तरह हलाहल विष पीकर सम्पूर्ण जलीय जीव जाति के साथ-साथ मानव का भी उद्धार करें। इसका उत्तर है- 'नहीं'। किन्तु सबके सम्मिलित प्रयास से नदियों और समुद्रों में व्याप्त प्रदूषण को दूर किया जा सकता है। इस दिशा में वर्तमान सरकार द्वारा भी कई प्रभावी कदम उठाये गये हैं तथा प्रदूषण संरक्षण और कायाकल्प के प्रभावी उन्मूलन के दोहरे उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए कई परियोजनाओं की शुरूआत की गई है जिसमें सामुदायिक भागीदारी को भी सम्मिलित किया गया है।

अंत में यही कहना चाहूंगी कि जलीय जीवों, के साथ-साथ सम्पूर्ण मानव जाति, पशु-पक्षी आदि का जीवन चक्र निरंतर चलता रहे, इसके लिए हम सभी को अपनी भारतीय संस्कृति का संवाहक बनकर नदी एवं समुद्री जल संरक्षण के हित में सम्मिलित भगीरथ प्रयास करना होगा तभी हम नदियों को माँ और समुद्र को देव कहने के हकदार होंगे। ❑

अपनी अपनी होली

— अयोध्या प्रसाद

होली की पूर्व संध्या पर,
नगर के एक वृद्धाश्रम में,
मैं मित्रों के संग गया था !
मन में भाव तमाम लिए !
चेहरे पर मुस्कान लिए !
झोलों में सामान लिए !

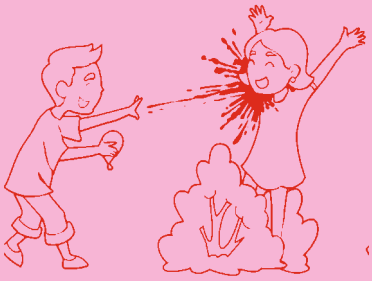

वार्डेन ने, कमरों में जाकर
सब जन को आवाज लगाई,
होली का सामान है आया !
बात सभी को बतलाई !

कोई आया छड़ी टेकते,
कोई था वाकर के संग,
उत्सुक, अशक्त, वृद्धजन !

खरामा, खरामा सभी आ गए
बारामदे में शांत, प्रतीक्षारत,
पंक्तिबद्ध खड़े हो गए !

तख्त पर सामान देखकर
भावुक हुए कुछ, कुछ मुस्कराए !
शायद अतीत के सुनहरे पल,
मानस पटल पर उनके,
बरबस ही, थे लौट आए !

एक समय ऐसा भी था, जब
उनके अपने अपने घरों में,
उमंग भरी होली होती थी !
पकवानों की सुस्वादु गंध से,
घर पूरा, भर जाता था !
होरिहारों की धमाचौकड़ी से,
आंगन रंग जाता था !

अबीर, गुलाल....रंग की छींटे,
निशान, पर्व के, छोड़ जाता था !
जीवन अब, हुआ बदरंग !
नहीं बचा अब, कोई रंग !

जीवन के अंतिम पड़ाव पर,
उनके हिस्से में, नया या
कुछ भी, नहीं विशेष है ।
साथ में है बेबसी, एकांत है,
.....और स्मृतियां शेष हैं ।

एक एक कर, सभी जनों को
गुझिया, पापड़, चिप्स थमाए !
आंखें भर आई थीं सबकी,
आंसुओं में थी अकथ कथाएं !

मिले हुए सब सामानों को,
कुछ इस तरह, समेटा सबने !
सौगात में मिले हुए हों,
हीरे, मोती, जवाहरात जैसे !

कहने को कुछ बचा नहीं था
उनके पास, न हमारे पास !
लेकिन सब ने आंसुओं में,
कह डाली थी दिल की बात !

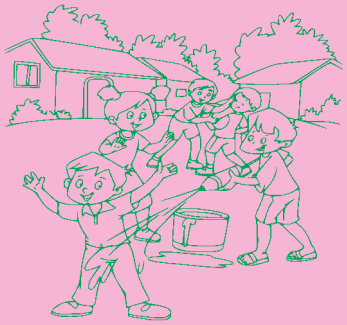

बीते पल, आंखों में समेटे,
भारी मन और कसक लिए !
वृद्धाश्रम से, बाहर निकले हम,
अपने घर जाने के लिए !

गुजरते हुए, बाजार से,
लोगों को, देखा मैंने !
पैसों से खुशियां खरीदते हुए !
झोलों में उनको, भरते हुए !

यूं तो, बोझिल था मन मेरा
वृद्धजनों सा हारा, थका !
किंतु हृदय के तड़ाग में
पूर्ण संतोष था, छलक रहा !

सबकी अपनी अपनी होली !
सबके अपने अपने रंग !
मेरी होली ऐसी थी जो,
पहले कभी नहीं मनी !

❑❑❑

पता : म0नं0–551घ/506, नन्दनगर, (निकट जय प्रकाश नगर)
आलमबाग, लखनऊ–226005 मो0– 8318926738

कर्मयोगी पं0 दीनदयाल उपाध्याय

अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 'सन्नी'

गौरवशाली भारतीय परम्परा के प्रतीक, राष्ट्रभक्ति की अलख जगाने वाले 20वीं शताब्दी के महान मनीषियों में पं0 दीनदयाल उपाध्याय का नाम बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में समान अधिकार रखने वाले बहुमुखी प्रतिभा के धनी, एकात्म मानववाद के प्रणेता, महामानव पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारत माँ के उन सपूतों में थे, जिन्होंने देश और समाज की सेवा करते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्रदेव के चरणों में अर्पित कर दिया। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व, निःस्वार्थ सेवा, बलिदान और परिश्रम की भावना का अप्रतिम उदाहरण है। वे हमारी धरती के पुण्य थे। हमारी धरती उन्हें पाकर निहाल हो उठी थी।

आज देश में अलगाववादी विघटनकारी शक्तियां सक्रिय हैं, ऐसे समय में इस युगपुरूष की याद राष्ट्रीय भावना को मजबूती प्रदान करेगी। भारत माता की कोख से पैदा हुआ हर व्यक्ति उसका बेटा और बेटी है। जो भी भारत में रहता है, यहां का अन्न, जल ग्रहण करता है और यहां की हवा में सांस लेकर जीता है, वह कोई हो, भारतीय है। वह अपने को सच्चे हृदय से भारतीय समझें और राष्ट्रीय भावना को सर्वोपरि माने। देश और देशवासियों के प्रति पंडित दीनदयाल उपाध्याय की यही अवधारणा थी।

वे मूलतः समाज सुधारक थे। अन्धविश्वासों, सड़ियों और सम्प्रदाय के भेदभावों का निर्मूलन सामाजिक उन्नति के लिए आवश्यक समझते थे। भारत अखण्ड और खुशहाल रहे, यह उनका चिन्तन था। वे कर्मयोगी थे। यह देश के गौरवशाली अतीत से भविष्य को जोड़ने वाले शिल्पी थे। सरल व्यवहार, सादा जीवन, उच्चविचार तथा कर्मठता की प्रतिमूर्ति पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने अपना सारा जीवन राष्ट्रहित और चिन्तन में लगाया। कश्मीर का आन्दोलन हो अथवा किसानों, मजदूरों का मोर्चा, पंचवर्षीय योजना हो या अन्य कोई कठिन सामाजिक समस्या, पं0 दीनदयाल ने गम्भीर और सारगर्भित विचार-मन्चन द्वारा जीवन पर्यन्त देश का मार्ग-दर्शन किया।

अपना सम्पूर्ण जीवन निः स्वार्थ भाव से राष्ट्र की सेवा में अर्पित करने वाले पंडित दीनदयाल जी का लक्ष्य राष्ट्र को राजनीतिक दृष्टि से सुदृढ़, सामाजिक दृष्टि से उन्नत तथा आर्थिक दृष्टि से समृद्ध करना था। सच्चे भाव से राष्ट्र की सेवा करने के कारण वह एक दल के ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश के लिए माननीय थे। भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी गहरी आस्था सर्वविदित है। राजनीति के क्षेत्र में कार्य करते हुए भी वह सदैव छल-प्रपंच से दूर रहे और देश की नयी पीढ़ी के राजनीतिज्ञों के प्रेरणास्त्रोत बने। वह सदैव मूल्याधिष्ठापित राजनीति

के प्रबल पक्षधर थे।

राजनीतिक तथा सामाजिक चेतना के साथ-साथ उपाध्याय जी की साहित्यिक प्रतिभा भी अनोखी थी। उन्होंने पत्रकारिता तथा साहित्य सृजन का कार्य भी सफलतापूर्वक किया। 'राष्ट्रधर्म' तथा 'पांच्यवन्य' जैसे लोकप्रिय पत्रों का सम्पादक बने। कालान्तर में दीनदयाल जी ने दैनिक 'स्वदेश' का भी प्रकाशन किया।

संगठनात्मक कुशलता के कारण पं0 दीनदयाल जी को कानपुर अधिवेशन में अखिल भारतीय जनसंघ का महामंत्री पद सौंपा गया। उन्होंने इस दायित्व का निर्वाह 1967 में कालीकट में सम्पन्न पार्टी के अधिवेशन तक किया। पार्टी को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को 1967 के अन्त में भारतीय जनसंघ का अध्यक्ष चुना गया।

पं0 दीनदयाल उपाध्याय भारतीय संस्कृति, अर्थशास्त्र तथा राजनीति के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन विषयों पर उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक तथा भारतीय परिवेश के अनुरूप हैं। निर्धन एवं गरीबों के लिए अन्त्योदय जैसे कल्याणकारी कार्यक्रम उन्हीं के आर्थिक चिन्तन पर आधारित थे। अपने आर्थिक चिन्तन की व्याख्या उन्होंने इस प्रकार की है 'आर्थिक योजनाओं तथा आर्थिक प्रगति का माप समाज के ऊपर की सीढ़ी पर पहुँचे व्यक्ति से नहीं, नीचे स्तर पर विद्यमान व्यक्ति से होगा। आज देश में ऐसे करोड़ों मानब हैं, जो मानव के किसी भी अधिकार का उपभोग नहीं कर पाते। शासन के नियम और व्यवस्थायें, योजनायें और नीतियां, प्रशासन का व्यवहार और भावना इनको अपनी परिधि में लेकर नहीं चलती, बल्कि उन्हें मार्ग का रोड़ा ही समझा जाता है। हमारी भावना और सिद्धान्त है कि वह मैले, कुचैले, अनपढ़, सीधे-सादे लोग हमारे नारायण हैं। हमें इनकी पूजा करनी है। यह हमारा सामाजिक एवं मानव धर्म है।

विश्व भर में चलने वाले आज के सभी राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक अधूरे 'वादों' से ऊपर उठकर उन्होंने एक अनूठे, मौलिक एवं सर्वांगीण 'एकात्म मानववाद' की अभिनव और व्यवहारिक परिकल्पना दी, जिसमे मानव के सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया गया है। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि कैसे 'नर' से 'नारायण' बनने के सोपान तय किये जा सकते हैं।

> ''समाजवाद, पूँजीवाद, प्रजातन्त्र अथवा अन्य कोई वाद अधिक से अधिक एक रास्ता है, प्रगति का अधार नहीं। व्यक्तिगत, दलगत या वादगत कोई विचार लेकर चलने से प्रगति नहीं हो सकती। राजनीति आखिर राष्ट्र के लिए ही है। यदि राष्ट्र का विचार छोड़ दिया, यानि राष्ट्र की अस्मिता, उसके इतिहास, संस्कृति एवं सभ्यता को छोड़ दिया तो राजनीति का क्या उपयोग?''
>
> - पं0 दीनदयाल उपाध्याय

पं0 दीनदयाल जी देश की एकता और अखण्डता की रक्षा के प्रति पूरी तरह समर्पित थे। उन्होंने अपने जीवन के हर क्षण कसे समाजसेवा में समाया। उन्होंने परिस्थिति से पराजित होकर सिद्धान्तों से कभी समझौता नहीं किया। निडर स्वभाव, मधुरवाणी किन्तु विचारों की इक्ता के चनी पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने संघर्षपूर्ण जीवन में सदैव कर्म की श्रेष्ठता को स्थापित किया। उन्होंने व्यक्तिगत सुख-सुविधा की कभी भी परवाह नहीं की। यह सच्चे अर्थों में कर्मयोगी थे। उनके जीवन, आदशों और सिद्धान्तों से प्रेरणा प्राप्त कर तथा उनके दिखाये मार्ग का अनुसरण करके हम भारत को एक महान एवं गौरवशाली राष्ट्र बनाने में सफल हो सकेंगे।

पं0 दीनदयाल एक व्यक्ति मात्र नहीं थे। प्रापः दीनदयाल जी का स्मरण उनकी कर्मसाधना के

सन्दर्भ में किया जाता है। राष्ट्रहित चिन्तन, उच्च विचार, मानवीय मूल्य और सादगी, एक साथ पंडित दीनदयाल जी के व्यक्तित्व में जीवन रूप में देखने को मिलते थे। पंडित जी मानव ही नहीं, मानव से बहुत ऊँचे थे। वे दरिद्रनारायण को अपना आराध्य देव मानते थे। वे समाज में समता, ममता, बन्धुत्व के प्रेरक और गरीबों के प्रति समर्पित थे। उनकी कथनी-करनी रहनी एक जैसी थी। पंडित जी का आर्थिक चिन्तन अत्यन्त व्यापक था। उनका एकात्म मानववाद आर्थिक चिन्तन के रूप में सर्वमान्य हुआ। पं0 जी की रहनी और सादगी के विषय में एक स्मरण याद आता है। पं0 जी जहाँ ठहरे थो, वहाँ अपनी बनियाइन और कपड़े एक जगह रखकर कुछ देर के लिए बाहर चले गये थे। जैसे ही वे लौटकर आये, पूंछने लगे 'मेरी बनियाइन और कपड़े कहाँ हैं?' एक कार्यकर्ता ने उनकी फटी हुई बनियाइन की जगह एक नई बनियाइन लाकर रख दी और कपड़े बोकर टांग दिये थे। इस पर पं0 जी ने कहा, 'अभी तो यह बनियाइन एक दो माह और चलती' साथ ही कपड़ों को फिर बोना शुरू कर दिया। वे कहने लगे में कपड़े अपने आप धोता हूँ। दूसरे के धोने से मेरी आदत में बदलाव आ सकता है यह थी पं0 जी की सादगी और रहनी। वे तो एक विरेड की भांति राष्ट्रचिन्तन में निरन्तर लगे रहते थे। वे उच्चकोटि के दार्शनिक थे।

''राजनीति में अनेक नेता आयेंगे, पर यह अभागा राष्ट्र दीनदयाल के लिए तरसेगा। दीनदयाल जी के कि चिन्तक ही नहीं दे, वरन् मानव के इतिहास का संदेश देकर तो वे युगपुरूष हो गये। मानव जीवन के सभी पहलुओं और विषयों का उन्होंने महरा अनुशीलन किया और जो विचार दिए, वे मानवजीवन श्री अनुत्थियों को सुलाने में समर्थ थे। उन्होंने प्राचीन और नवीन, विज्ञान और दर्शन तथा अध्यात्म और भौतिकता के बीच अत्यन्त भौतिक उन से समन्वय स्थापित कर यह प्रतिपादित किया कि जीवन को वास्तविक सुधी बनाने के लिए केवल रोटी ही नहीं, उसके साथ अध्यात्म की भी जरूरत है। अपनी अल्पायु में भी हिन्दू संस्कृति की विशेषता

माता-पिता की छाया से बचपन में ही वंचित 'दीन' को अपने मामा के यहां हीं शरण लेने को मजबूर होना पड़ा। किन्तु कष्टों और अभावों में भी प्रतिमा मुरझायी नहीं। वे प्राकृतिक चिकित्सा के प्रबल पक्षधर थे। विदेशी चिकित्सा पद्धति भारत की जलवायु और प्रकृति के अनुकूल नहीं है। यह उनका मानना था। उनका कहना था कि भारतीय लोग व्यायाम-प्रणायाम एवं मन-वचन-कर्म की शुद्धता पर यदि ध्यान दें तो वे पूर्णतया निरोगी रह सकते हैं।

के अनुरूप शास्वत आधुनिकता का मन्त्र देकर हमें और समूचे मानव समाज को निरन्तर सुख का मार्ग विश्वास आवश्यकता है उनके विचारों के प्रचार की और उन्हें जीवन में उतारने की।

भौतिक रूप से भले ही आज पं0 दीनदयाल उपाध्याय हमारे बीच नहीं है, परन्तु उनके विचार, उनकी दी हुई प्रेरणा आज भी हमे कर्तव्य पथ पर अग्रसर होने में एक प्रेरक शक्ति का कार्य कर ही है। उनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके आदर्शों को जीवन में उतारते हुए उनके मूल मन्च बरकत अर्थात् बलते रहो, को सही अर्थों में सार्थकता प्रदान करें। में पं0 जी के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए यही कामना करता हूँ कि उनके राष्ट्रहित, समर्पण की भावना, हम सबको निरन्तर प्रेरणा देती रहे। ❑❑

पता- एस 2/326 ई-3,
राजर्षि नगर कालोनी,
8 भोजूवीर वाराणसी।
फोन - 7408900009

लोकगीतों में रामकथा
अथवा लोकगीतों में राम और अयोध्या

-डा. शिव राम पाण्डेय

अयोध्या आज चक्रवर्ती सम्राट राजा दशरथ के समय जैसी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न समृद्धिशाली और परम पवित्र हो गयी है। बीच के कालखण्ड में विदेशी आक्रांताओं का दंश झेल चुकी अयोध्या पुनः परम सुहावनी और मन भावनी हो गई है। आज बिना बुलाये प्रति दिन करोड़ों लोग अयोध्या पहुंच कर रामलला की एक झलक पाने को आतुर हैं। पुण्य सलिला सरयू नदी की तकदीर संवर गई है। आज करोड़ों लोग केवल अयोध्या में ही सरयू में स्नान कर अपने को धन्य मान रहे हैं। अयोध्या की हनुमान गढ़ी आज बहुत प्रफुल्लित है। राम जन्मभूमि के निकट ही स्थित हनुमान जी की गढ़ी आज पुनः गुलजार हो गई है।

अयोध्या और आस-पास के जनपदों की जनता बिना अयोध्या पहुंचे ही मनमगन होकर राम के भजन गा रही है। गांव गांव व में सोहर और बधावा गाया जा रहा है मानो राम जी ने अभी-अभी फिर से अवतार लिया है।अवध क्षेत्र के लोगों के मन में राम और अयोध्या आदि काल से रचे बसे हैं। भगवान राम की नवीन मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा भले ही 22 जनवरी 2024 में हुई मगर अवध क्षेत्र के कण कण और क्षण क्षण में राम सदियों से समाये हुए हैं। यहां के लोगों का प्रत्येक काम राम का ही नाम लेकर शुरू होता है। रीति रिवाजों में भी राम रचे बसे हैं। हर तरह के लोकगीतों में भी राम की कथा की ही प्रधानता है। हर कोई राम का अनुयाई है और यह जानते हुए भी कि राम को 14 वर्षों तक बनवास झेलना पड़ा था, फिर भी हर कोई राम जैसे ही बनना चाहता है।

कजरी हो या चौता,भजन हो या निर्गुन, झूला गीत हो या भोरहरी,सोहर हो या विवाहगीत जंतसार हो या फगुआ सभी में राम और उनकी अयोध्या का जिक्र जरूर मिलता है। अवध क्षेत्र के जन-जन और कण-कण में राम और अयोध्या विराजमान हैं।

लोकगीतों के आख्यान में राम की ही बहुलता है। राम ही सभी के जीवन आदर्श है, उनके द्वारा निर्मित जीवन मर्यादा सभी के लिए जीवन पथ है। धर्म प्राण जनता राम की खुशी में खुश और राम के दुख में अपना दुख देखती है। उसके लिए अगर राम नहीं तो कुछ भी नहीं । यथा-राजा दशरथ के यहां अभी राम जी का अवतार नहीं हुआ है। बड़ी रानी कौशल्या चिंतित हैं, क्योंकि राजा दशरथ को कोई संतान नहीं है। अयोध्या सूनी-सूनी सी लग रही है। तब तक कोई पण्डित जी आ गए। रानी ने उनसे अपनी चिंता की चर्चा की। पण्डित ने पोथी देख कर बताया कि उनके भाग्य में बालक है नहीं। रानी की चिंता और बढ़ गई और उन्होंने महल में जाकर यह बात राजा दशरथ को बताया।

राजा दशरथ भी चिंतित हो गए और वह गुरू बशिष्ठ जी के पास गये और उन्हें अपनी चिंता से अवगत कराया। तब गुरू जी ने उन्हें यज्ञ करने का उपाय बताया और आस्वस्त किया कि यह उपाय करने के बाद उन्हें पुत्र लाभ अवष्य होगा। इसी बात को अवध क्षेत्र की महिलायें सोहर में इस प्रकार गाती हैं।

मचियहिं बैठि कौशल्या तौ पण्डित से
अरजि करें पण्डित से अरजि करें हो।
पण्डित सून लागे हमरी अयोध्या,
कछू ना मन भावै ,कछू ना मन भावै हो।
एतना बचनिया सुनि कै पण्डित
पोथियां उठावें तो पोथियां उठावें हो।
रानी नाहीं लिखा तोहरे बलकवा,
अयोध्या रही सूनइ हो।
एतना बचनि सुनकै रानी तौ
धाई कै महल गई धाई कै महल गई
महलै में मिले दशरथ तो ओनसे
अरज करें, राजा से अरज करें हो।
राजा नाही लिखा बालक लिलरवा

तो बालक लिलरवा,
अजोध्या रही सूनइ हो।
एतना बचनिया सुनि राजा तो
गुरू के भवन गये,
गुरू से अरज किहे हो।
गुरू जी नाही हमरे न एकउ
बलकवा अजोध्या सूनी लागै हो।
एतने पै गुरू जी बचन बोले,
गुरू जी बचन बोले हो।
राजा एकर तो एकइ उपाय,
उहौ तू नाहीं करब्या हो।
राजा एकरे लिए तूं जज्ञ रोपौ
रमैया तोहरे होइहंय हो।

राजा दशरथ ने गुरू की आज्ञानुसार पुत्रेष्टि यज्ञ किया। राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न का जन्म हुआ। बालक अब चलने फिरने और खेलने लगे हैं। एक चौताल फाग गीत में यह दृश्य देखिए-

अरे कौशल्या खेलावें चारिउ बारे,
अंगनवां मझारे।
पन्नीदार पांव में पनही,
कर सर धनुष सिधारे।
कामदार टोपी अति सुन्दर,
कामदार टोपी अति सुन्दर,
सिर झलके बार गोभवारे। अंगनवां मझारे।
विविधि भांति पकवान खियावत
कंचन के भरि थारे।
लै कै रूमाल माथ मुख पोंछत।
लै कै रूमाल माथ मुख पोंछत।
पलगंह पर देते ओलारे। अंगनवां मझारे।
चमकत मुकुट परा मथवा पर
चन्द्र कला उजियारे।
घूमि घूमि घुमरी सब खेलत।
घूमि घूमि घुमरी सब खेलत।
रबि कर रथ ठाढ़ निहारे। अंगनवां मझारे।
कहत राम मचलाय मातु से उठि
उठि भागय द्वारे।
शिव परसाद नाथ हंसि बोलत।
शिव परसाद नाथ हंसि बोलत।
हम लेबै खिलौना हो तारे, अंगनवां मझारे।
उलारा
माइया मैं चंद्र खिलौना लै हो
- माइया मैं चंद्र खिलौना लै हो
गेंद खेलन को तारा मंगाय दो
गेंद खेलन को तारा मंगाय दो
मैं तो सुरजहि पतंग उड़इहों।
मां मुझे तारा मंगाय दो।

फुलवारी प्रसंग-

राम लक्ष्मण अब और बड़े हो चुके हैं। मुनि विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिए राम और लक्ष्मण को उनके पिता राजा दशरथ से मांग अपने साथ लेकर आये हैं। विश्वामित्र जी को धनुष यज्ञ में शामिल होने के लिए राजा जनक जी का निमंत्रण पत्र मिला है। वह राम और लक्ष्मण को साथ लेकर जनकपुर आये हुए हैं। उनकी आज्ञा लेकर दोनों भाई फूल लेने के लिए राजा जनक की पुष्प वाटिका में आये हुए हैं। उसी समय सीता जी भी पुष्प वाटिका स्थित माता गौरी के मंदिर में पूजा अर्चना करने आयी हैं। दोनों एक दूसरे को देख लेते हैं। इसका वर्णन इस चौताल फाग में देखिए -

श्री राम लखन दोउ भाई, घुमत फुलवाई।
गिरजा पूजन चली जानकी
संग में सखियां सयानी।
करि पूजा गिरजा जी कां विनवत।
करि पूजा गिरजा जी कां विनवत।
माता पुरवउ आस हमारी। घुमत फुलवारी
करि पूजा जब लौटी जानकी,
करि पूजा जब लौटी जानकी
मिले राम लखन दोउ भाई। घुमत फुलवारी,
तिरछी नजर से राम जी चितवत,
तिरछी नजर से राम जी चितवत
लागे हनिकै करेजवा कटारी।
घुमत फुलवारी।
केहु ब्रह्मा विधि जोग मिलावें,
केहु ब्रह्मा विधि जोग मिलावें,
भला यनहीं पुरूष हम नारी।
घुमत फुलवारी

चारों बालक और बड़े हो गए। जनकपुर सीता के विवाह के लिए राजा जनक जी ने स्वयंवर

का आयोजन किया। राम चन्द्र जी ने शिव धनुष को उठा कर चाप चढ़ाया, धनुष टूट भी गया और राम जी की बारात सीता जी को ब्याहने के लिए अवधपुरी से जनकपुर के लिए प्रस्थान कर रही है। यह सब कैसे हुआ इस चौताल फगुआ गीत में देखिए।-

अब ईहां से करहु पयाना। जनकपुर जाना।
सजी आलकी, सजी पालकी,
चौडण्डी चौम्याना।
तासा तुरही नरसिंहा, बाजत,
तासा तुरही नरसिंहा, बाजत।
सब भरत कय करत बखाना।
जनकपुर जाना।
आई बरात जनकपुर उतरी,
अब आइए गये अगुआना।
जनकपुर जाना।
आई बरात दुआरे पै पहुंचत,
होए लाग द्वारचारा।
गुरू वशिष्ठ औ विश्वामित्र जी
करैं मंत्र उच्चारा।
सब बर कइ करत बखना,
जनकपुर जाना।
कन्यादान किये है जनक जी,
कन्यादान किये है जनक जी।
कृतकृत्य है जनक घराना।
जनकपुर जाना।
सुनि यह बात मुदित कौशल्या
कैकेई से बोली,
करो परिछन को इंतजामा।
अवधपुर आना।
आई कय डोली अवधपुर उतरत।
आई कय डोली अवधपुर उतरत।
सब दुलहिन कय करैं अगुआना,
अवधपुर आना।
सब सखियां मिलि मंगल गावत।
तीनों मइया करत अगवाना।
अवधपुर आना।

राम चंद्र से विवाह हो जाने पर सभी ने सीता के भाग्य की सराहना किया। माता कौशल्या भी बहुत खुष हैं इस फगुआ गीत में सीता के भाग्य की सराहना करते हुए वह कहती हैं -

धन्य धन्य सिया तोरा भाग्य राम बर पाई।
बृन्दा बन से बांस मंगायउ,
रचि रचि माड़व छाई।
सब सीता कइ भाग्य सराहत
सब सीता कइ भग्य सराहत
विधिना कर करत बड़ाई राम बर पाई
सुबरन कलश धरे बेदिया पर सुबरन
कलश धरे बेदिया पर
जहां मानिक दियना जराई। राम बर पाई।
चिठिया लिखि लिखि राजा जनक जी,
चारिउ ओर भिजाई
विश्वामित्रा कां दीनह पठाई।
----राम बर पाई।
साजि बरात चले हैं राजा दशरथ,
साजि बरात चले हैं राजा दशरथ,
सब पहुंचे जनकपुर आई। राम बर पाई।
सिया जयमाल राम गले डारत,
सिया जयमाल राम गले डारत,
सब देव सुमन बरसाई। राम बर पाई।।
उलारा-
सिया उालीं राम गले जयमाला
सिया उालीं राम गले जयमाला।
देश-देश कय भूपति आये
देश-देश कय भूपति आये
खिसियाय थके सब भूपाला
सिया डालीं राम गले जयमाला।

राम लोक जीवन में इस कदर समाये हुए हैं कि अयोध्या के राजमहल में कब क्या हो रहा है जनता सभी से वाकिफ है। राजा दशरथ के यहां बहुत दिनों तक संतान न होने की बात तो मालूम है ही ,उसे राम के विवाह की भी चिंता है। लोकगीतों में इस चिंता को देखिए। माता कौशल्या कहती हैं कि पहले मैं राम के जन्म के लिए तरसती रही और जब जन्म भी हुआ तो अब विवाह राम के विवाह के लिए तरस रही हूं उनकी यह चिंता इस विवाह गीत में देखिये-

पहिले मैं झंख्यौं रामा के जन्म कां,
अब झंख्यौं राम के बियाह।।

माता की चिंता देख राम जी भला चुप कैसे बैठे रहते। तुरंत धनुष धारण उठा कर अपने लिए दुल्हन खोजने के लिए तैयार हो गये।

यतना बचनियां रामा सुनहूं न पाये,
कि लिहलेन उठाई धनुहा बान।।

अवध क्षेत्र में पान और दोहरा खाने का प्रचलन आज भी है। उसी के अनुरूप लोकगीत में वह रास्ता के खर्च के रूप में खैर सुपारी और एक ढोली (200 पान के पत्ते) मगही पान मांगते हैं।

देहू न माता मोहीं खयर सोपरिया,
अउर मगहिया ढोली पान।
खात पियत चला जइबै जनकपुर,
जहां बाटीं सीता सुकुमारि।।

राम जी दुल्हन की खोज में सीधे जनकपुर पहुंचे। शायद इसीलिए कि जानकी का जन्म उस समय की विशेष घटना थी। उनका जन्म सीधे धरती से हुआ था इसलिए उन्हें देखने की जिज्ञासा सबको थी। राम जी सीधे पहुंच गये जनक जी की फुलवारी में। वहां पर उनकी भेंट सीधे जनक जी से हुई।

राजा जनक को लगा कि राजकुमार सा दिखने वाला लड़का या तो प्यासा होगा और अगर किसी ऋषि मुनि ने भेजा होगा तो शायद भिक्षाटन करने आया होगा। इसीलिए वह कहते हैं कि हे पुत्र तुम्हें प्यास लगी है या फिर भिक्षा चाहिए। इस प्रश्न पर राम सीधे सीता का हाथ मांग लेते हैं।

एक बन गये रामा दूसरे बन पहुंचे,
तीसरे मां राजा फुलवारि।
हथवा में लोटा डोरी, कान्हें पै धोतिया,
राजा श्रृषि चले हैं नहाय।।
की हया तुही बेटा भिखिया के भूखा,
कि तोहरे लागी बा पियासि।
नाहीं हम हयी राजा भिखिया के भूखा,
नाहीं हमरे लागि बा पियासि।।
तोहर घरा में बेटी सीता कुआंरी हईं,
कइ देता हमरा बियाह।।

विवाह संबंधी एक और लोकगीत देखिए जिसमें सीता के जन्म और उनके लिए वर की चिंता दर्शाई गई है।

राजा जनक जी के सीता बिटियवा,
जइसे दुइजिया के चांद,
सुपवा लोढ़त कन्या वर मांगै,
केहि विधि पूरन होय।
इड़हर हेरेन बिड़हर हेरेन,
बर हेरेन देश सरूआरि।
तोहरे जोगे बर नाहीं मिला बेटी,
कइसे के रचहउं बियाह।।

इस समस्या का समाधान सीता जी स्वयं करते हुए कहती हैं -

काहें कां खोज्या इड़हर बइड़हर,
काहें बर खोज्या सरूआरि।
पांच परग भुईं अयोध्या न खोज्या,
जहां चारिउ बर खेलत कुआंर।।
चारिव भइया में जो बर साँवर,
ओनही के तिलक चढ़ाउ।।
सांवर बर देखि जिनि भरम्या बाबा,
साँवर श्री भगवान।

सीता और राम का विवाह हो जाता है। अब माता कौशल्या जी राम और सीता के दाम्पत्य प्रेम की परीक्षा लेने के लिए कहती हैं। हे बटा तुम अपनी दुल्हन मायके भेज दो और दूसरी शादी कर लो।

मचियहिं बैठि बोली मातु कौशल्या,
सुना बेटा बचन हमार।
अपनी दुल्हन बेटा नैहर पठवत्या,
कइ लेत्या दूसर बियाह।।

आदर्शवादी राम, माता की अवज्ञा तो नहीं कर सकते थे मगर यह सवाल तो पूछ ही लेते हैं कि सीता में आखिर खोट क्या है। न तो वह चंचल है, न झगड़ालू है,न तो वह अगली पगली है फिर क्यों छोड़ दें सीता को।

न सीता चंचल न सीता बाउरि,
नाहीं सीता मुंहवा कर जोरि।
कवन गुनहियां लगाइव मोरी मइया,
कइसे करी दूसर वियाह।।

उधर सीता से भी माता कौशल्या ने, प्रश्न किया कि क्या उपाय करने पर राम तुम्हें पति के रूप में मिले।

सासु दुलारि के बउहरि कां बुलावें,
सुना बउहरि अरजि हमार।

कवनि कवन तप किह्यू मोरी
बउहरि पाई गइव राम कां सोहाग।।
इस प्रश्न के उत्तर में सीता जी बताती हैं कि -
माघ नहायौं अगिनि नाहीं ताप्यौं,
जेठवा न झल्यौ मैं बयार।
सावन मास जवरिया न खायौं
भादों भइसिया के दूध।
नैहर मां रही, भउजी के तरहीं,
(नियंत्रण) तब पाये राम सोहाग।।

चारो भाइयों का विवाह हो चुका है राम चन्द्र जी का राज तिलक होते होते वनवास हो गया। लक्ष्मण और सीता भी उनके साथ वनवास के लिए चले गये हैं अब।अब माता कौशल्या क्या कह रही हैं-

राम बिना मोरी सूनी अयोध्या
लखन बिना चौपाई।
सीता बिना मोरी सूनी रसोइया
के मोरा जेवना बनाई।।

बिपत्ति पर बिपत्ति, वनवास काल में खर-दूषण का वध और उसके बाद सीता का हरण। एक चौताल फाग गीत में सीता हरण की घटना दृष्टब्य है।

लइ गय जनक लली कां उठाई,
दशानन आई।
मिरगा मारन हेतु गये बन राम
लखन दोउ भाई।
भवन अकेली जानि सिया सुंदरि
पहुंचा रावन जाई।
रूप जती के धइकै रावन भीख भीख गोहराईं।
दशानन आई।
भिक्षा लइ सिया कुटिया से निकली,
रेखा बाहेर आई।
धाई उठाई लंकपति रावन,
धाई उठाई लंकपति रावन।
ओनकां रथ पै लिहिस बैठाई।
दशानन आई।
करते विलाप जगत की जननी
लछिमन कां गोहराईं।--दशानन आई।
हाथ उठाई लछिमन कां पुकारत
रावन के संग जाई,
देवर हमकां तू लेहु छोड़ाई। दशानन आई

रावण सीता जी का हरण करके लंका आ चुका है। उसने सीता जी को उनके अनुरोध पर राजमहल के बजाय अशोक वाटिका में रखा है।

अशोक वाटिका-

सीता के वियोग में व्याकुल राम लक्ष्मण की हनुमान और सग्रीव से भेंट, दोनों में मित्रता, और समुद्र पार करके हनुमान जी का लंका में प्रवेश। माता जानकी से अशोक वाटिका में मुलाकात। सीता और हनुमान की वार्ता चौताल फगुआ गीत इस प्रकार होती है।

कपि कब अइहैं अवध विहारी, हमैं दुख भारी।
जबसे छूटा राज अवध कय,
हमकां विपत्ति पछारी ,हो अवध विहारी।।
देवर एक रहे मोरे संग अब
ओनहूं हैं सुरति बिसारी।
माह भरे मां रघुपति नाही अइहैं
तौ खाय मरब करियारी। हमैं दुख भारी।
कहैं हनुमान धीर धरू माता।
कहैं हनुमान धीर धरू माता।
अइहैं तुहैं लेन प्रभु रघुवर,
अरे रावण कां संहारी। तुम्हैं दुख भारी।
सेन सहित प्रभु लंका मां
अइहंय तुलसी दास प्रभु तुहैं लइ जैहैं।
दशकंधर ओ लंकं उजारी।
तुम्हैं दुख भारी।

प्रसंग लंका ही है। लक्ष्मण जी को शक्ति वांण लग चुका है। शुषेन वैद्य ने उनके प्राणों की रक्षा के लिए रात भीतर ही संजीवनी बूटी पिलाने का सुझाव दिया है। संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान जी गये भी हैं मगर आने में विलम्ब हो रहा जिससे चिंतित राम चन्द्र जी कहते हैं -

मोहि तात निहारत रात गई।
हनुमान कहां अरूझाने। भोर नगचाने।
बूटी सजीवनि अइहैं, न कामा।
होतै भोर जैहैं सुरधामा।

अरे आवत काल नेराने। भोर नगचाने।
अवध के वासी मिलेंगे जब आई के।
कवन जवाब देब हम जाइकै।
माता जब अइहैं लेन गोद ।
हमसे बनिहैं न करत बहाने भोर नगचाने।
भरि आये नयना बहे लागे नीरा।
उठो लखन कहां लागे हैं तीरा ।
कोमल गात सुखाने। भोर नगचाने।
खोलहु नयन विलोकहुं ताता।
मिलहिं न जगत सहोदर भ्राता।
एक नारि गयी तो मिलेंगी कयी।
पर भाई को मिलन दुलाना। भोर नगचाने।
कर्मगति की गति होती है न्यारी।
जो विधान लिखा दीन्हा लिलारी
अब वह टारें टरे न। भोर नगचाने
द्विज संता सोचत भगवाना।
बूटी सजीवनि लइ लाये हनुमाना।
उठि बैठे लखन बूटी घूंटि लिये,
सुर बरसे सुमन विमाना। भोर नगचाना।

और अब प्रस्तुत है कुछ भजन और भोरहरी गीत। अवध क्षेत्र में खासतौर अधिकांश ग्रामीण और वरिष्ठ जन भोर में चार बजे जग जाते हैं। छोटे बच्चे भी भोर में जग जाते हैं। माताएं भोर में ही जग कर पशुपालन और घरेलू कामों में लग जाती हैं। अब छोटे बच्चों को संभालने की जिम्मेदारी वरिष्ठ प्रायः दादा दादी की होती है। ऐसे वरिष्ठ जन कुछ गीत गवनई गाकर बच्चों को बहलाते हैं प्रौढ़ जांत ,कांड़ी,ढेंका, चकिया पर काम करते हुए भजन और तत्कालीन देश-काल के अनुरूप पारिवारिक गीत गाकर अपने श्रम का परिहार करती थीं। इनमें से धार्मिक और आध्यात्मिक गीतों को भजन और पारिवारिक सांसारिक गीतों को भोरहरी कहते हैं। प्रस्तुत हैं कुछ उदाहरण -

रामहिं राम रटन लागीं जिभिया हो।
गोड़वा कहइ हम तीरथ करबै
रामा हथवा कहै हम करबइ दान ।
रटन लागी जिभिया हो -------।
अंखियां कहइ हम दरशन करबइ
रामा कनवा कहइ हम सुनबइ पुरान हो
रटन लागी जिभिया हो -------।
कइ ल्या असनान हो विमल जल सरयू कय।
यहि सरजू जी में राम नहाये हो,
राम नहाये संग लक्ष्मण नहाये हो।
सीता जी नहानी इहां चादरि तानि
हो विमल जल सरजू कय।
भरत जी नहाने इहां शत्रुघ्न नहाने हो।
दसंत जन नहाये इहां संझा विज्ञान हो।
विमल जल सरजू कय।

इस डेढ़ताल फाग गीत के माध्यम से आप अयोध्या नगर। वहां का वातावरण और विशेषताएं देख सकते हैं। -

सजनी तोरे कारन छोड़ा धाम,
कछु दिन वैराग्य करेंगे। -----अवध में रहेंगे।
हाथे कमण्डल ,बगल मृग छाला।
माथे तिलक गले तुलसी के माला
प्रेम सहित पहिरेंगे। अवध मैं रहगे
राम घाट पर कुटिया छवाई के,
भोरेंह उठि सरयू में नहाइ के,
संतन संग टेरेब राम नाम।
रामायण नित्य पढ़ेंगे।----अवध में रहेंगे।
दरशन करि बजरंग बली को।
औरो रसोई श्री जनक लली कै।
नैना पसारा लखेंगे। अवध में रहेंगे।
मातगैंड और कनक भवन में,
करि सत्संग श्रीसंता सदन में।
कछु देर वहां करिके विराम,
चरणामृत लै विनवैंगे। अवध मैं रहेंगे।
छोडि अवध कतहूं नाहीं जाबै।
दर्शन करब मधुर फल खाबै।
नयना पसारा लखैंगे। अवध में रहेंगे।
या तौ तू आई के दरश देखइबू,
नाही तो साधू को नाम धरइबू।
अब हमरो है अभिलाश श्याम।
निज जीवन सफल करेंगे, अवध में रहेंगे।

❑❑❑

सम्पर्क सूत्र : 9415757 822

अयोध्या : आस्था एवम् अर्थशास्त्र एक अध्ययन

— संजय कुमार मिश्र 'रजोल'
प्रवक्ता वाणिज्य

अयोध्या आज विश्व भर में चर्चित है। श्रीराम का भव्य मन्दिर लोकार्पित हो चुका है। प्रतिदिन लगभग दो लाख लोग अयोध्या दर्शन करने आ रहे हैं। अयोध्या आस्था का केन्द्र है। श्री राम का आदर्श भारतीय समाज को प्रेरित करता रहा है, लेकिन आज अयोध्या केवल धर्म नगरी ही नही है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। आज की अयोध्या बदली हुई है। अयोध्या सप्तपुरियो मे शामिल है। मूलतः अयोध्या का सम्बन्ध श्रीराम से माना जाता है,लेकिन यहा बौद्ध और जैन धर्म के महापुरूषों ने भी अपना केन्द्र बनाया।कहने का तात्पर्य यह है कि यह पौराणिक नगर सभी धर्मों के अनुयायियों से सम्बन्धित है। अयोध्या विवाद भी सारे विश्व मे चर्चित हुआ लेकिन यह विवाद इतनी शान्ति से समाप्त हुआ जो खुद आश्चर्यजनक है। ऐसा माना जाता है कि श्री राम के जन्म स्थान पर एक मन्दिर था जिसे मुगल बाबर के लडाके मीर बाकी ने ध्वस्त कर दिया था और उस स्थान पर एक मस्जिद बनाई गई थी यह विवाद समय-समय पर जोर पकड़ता रहा। तमाम संघर्ष और बलिदान भी हुए।अंततः पाच न्यायाधीशो की पीठ स्वामित्व मामलों की सुनवाई की और विवाद का सर्वमान्य हल मिल गया। श्री राम मन्दिर का निर्माण अगस्त 2020 में शुरू हुआ और 22 जनवरी 2024 को देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में श्रीराम लला के बाल स्वरूप विग्रह की प्रतिष्ठा की गयी ! सर्वतः राममय वातावरण एवं राम राज्य की कल्पना एवं कामना भी मुखरित होने लगी। अयोध्या की आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का आकलनआवश्यक है क्योकि धीरे-धीरे अयोध्या प्राचीन गौरव का प्राप्त करने के साथ आज का अधुनातन नगर बनने की ओर अग्रसर है।

अयोध्या नगर अयोध्या जिले उ. प्र. के पूर्वांचल मे अक्षांश 26 डिग्री 47 '59.08' उत्तर और देशान्तर 82 डिग्री 12'18.59' पूर्व पर स्थित है। अयोध्या नगर एक महत्व पूर्ण स्थान है। यह भारत के सात पवित्र नगरों में से एक है । अयोध्या जिसे साकेत नाम से भी जाना जाता है, भारत का एक प्राचीन नगर है जो भगवान श्रीराम का जन्म स्थान है और सरयू नदी के तट पर स्थित है।

अयोध्या की देश व प्रदेश के मुख्य नगरों तथा प्रदेश की राजधानी लखनक से सड़क मार्ग एवं रेलमार्ग से सम्बद्धता है। राष्ट्रीय राजमार्ग 72 नगर से होकर गुजरता है। यहा प्रतिवर्ष लाखों लोग तीर्थ यात्रा के लिए आते है। हिन्दू पौराणिक कथाओं

मे इसे विष्णु के मस्तक के रूप मे माना गया है।

अयोध्या की नगरीय जनसंख्या 2,21,118 है। जिसमे 53.6% पुरूष और 46.94% महिलाएं है। किसी भी शहर का आर्थिक विकास का आधार उसकी कार्यशील जनसंख्या होती है। अयोध्या नगर की कुल 31 प्रतिशत जनसंख्या आर्थिक क्रियाओं मे शामिल है। अयोध्या नगर की कुल कार्यशील जनसंख्या 69499 है जिसमें पुरूष कार्यशील जनसंख्या 57047 एवं महिला कार्यशील जनसंख्या 12452 है। जनगणना के अनुसार ऐसे व्यक्ति तो सरकारी भूमि अथवा निजी भूमि अथवा किसी संस्था की भूमि पर सहभागिता अथवा मुद्रा विनिमय अथवा अन्य किसी आर्थिक लाभ हेतु कृषि क्रिया मे संलग्न है कृषक श्रेणी में वर्गीकृत किया जाता है। अयोध्या में 1039 कृषक, 1286 कृषि मजदूर, घरेलू उद्योग कामगार 2900 एवं 48769 अन्य कामगार है। अयोध्या मे सीमांत कामगारो का प्रतिशत 5% है। जिसमे 15506 व्यक्ति सम्मिलित हैं। सीमांत कामगारो मे अन्य कामगारो की जनसंख्या का प्रतिशत 85% तथा घरेलू उद्योग कामगार 8% कृषि मजदूर 6% एवं कृषक 1% है।

सामाजिक आधार भूत संरचना मे शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन

सामाजिक सांस्कृतिक सुविधाए, पुलिस, अग्निशमन, डाक सेवाएं, दूर संचार और वितरण सेवाए शामिल है। वर्तमान मे अयोध्या नगर में 236 स्कूल है जो कि जनसंख्या के लिए पर्याप्त है।

पर्यटन गतिविधि पर्यटन को प्रोत्साहित करने मे बडी भूमिका निभाती है। पर्यटन गतिविधि के लाभो मे शुल्क और करो द्वारा उत्पन्न राजस्व और आगंतुको के पक्ष मे और संसाधनो के उपयोग के लिए किए गए अन्य स्वैच्छिक भुगतान शामिल है। बदले मे राजस्व का उपयोग प्राकृतिक क्षेत्र को बनाए रखने के लिए किया जाता है।

अयोध्या की पर्यटन गतिविधियो मे एक दिन मे पूरी होने वाली मोक्ष दायिनी यात्रा है। इसमें परम्परागत अखाडो द्वारा गलियो मे भ्रमण किया जाता है, साथ ही मन्दिरों का भ्रमण, शान्त घाटों तथा अयोध्या के अतुलनीय समाज का और अध्यात्मिक विरासत का भी दर्शन किया जाता है। इसके पश्चात् सूर्यास्त के समय सरयू आरती हेतु जन सैलाब भी इसका हिस्सा बनता है। एक दिन मे पूरी होने वाली सबसे छोटी अंतर्ग्रही परिक्रमा है। भक्तो को सरयू स्नान के पश्चात रामघाट, सीताकुण्ड, मणिपर्वत, ब्रह्मपुत्र, होते हुए कनक भवन पहुँचना होता है। पंचकोसी परिक्रमा चक्रतीर्थ होकर नयाघाट, सरयूबाग होल्कर का पुरवा, दशरथ कुण्ड, जोगियाना, रानोपाली, जलपा नाला और महता बाग तक चलती है। चौदह कोसी परिक्रमा अक्षय नवमी को होती है, इसे एक दिन मे पूरा करना होता है। उत्तर प्रदेश में 285079948 पर्यटक आते हैं जिसमें 37,80,752 विदेशी पर्यटक रहे। अयोध्या मे 20122436 पर्यटक घरेलू तथा 26956 अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आए।

अयोध्या का विस्तार होने के साथ साथ कई नागरिक समस्याएं भी खड़ी होती जा रही हैं। शहर मे पार्किंग सुविधा न होने के कारण ट्रैफिक जाम होता है। चरम समय पर यातायात जाम एक समस्या है। शहर मे मुख्य रूप से खुली और बंद जल निकासी व्यवस्था है। जो एक मुद्दा है, क्योंकि पानी की आपूर्ति का मुख्य स्रोत भूजल है। शहर में जल की आपूर्ति पर्याप्त नहीं है। अयोध्या में सड़कों के किनारे अनेक अनौपचारिक गतिविधियां चलती हैं और अनौपचारिक क्षेत्र के लिए कोई निर्दिष्ट स्थान नहीं है। पर्यटकों की संख्या मे लगातार वृद्धि हुई है परन्तु संबंधित बुनियादी ढांचा विकसित नहीं हो सका। अयोध्या आस्थावानों की नगरी है तो इसके आर्थिक आयाम भी स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक महत्व पूर्ण है। ❑

पता : 2/ 348 रूचि खंड,
शारदा नगर, लखनऊ
मो0 : 9335274015

रामराज्य की छाया में मोदी राज

– डॉ राघवेन्द्र शुक्ल'

भारत मे आगामी लोकसभा चुनाव इस वर्ष सन् 2024 में सन्निकट है। नरेन्द्र मोदी यह चुनाव जीत चुके हैं। यह पहला अवसर होगा,जब कोई चुनाव आरम्भ होने से पूर्व ही समाप्त हो गया हो। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी यात्रा सुनिश्चित है, अबाध है, निष्कंटक है। क्योंकि उन्होंने अपने को राम की कृपा का पात्र बनाया। निरूसंदेह वे रामभक्त है। और उन्होंने राम कसौटी पर अपने को परखा है। इस पर वे खरे उतरे,अपने को सिद्ध करने में सफल रहे। 'राम काज कीन्हें बिना मोहि कहां विश्राम' इसी मिशन पर वे आगे बढ़ रहे हैं। रामराज्य की छाया में मोदी राज का भविष्य स्पष्ट दृष्टिगत हो रहा है। राम की रथयात्रा केवल भारत ही नहीं, अन्य देशों से होकर आगे बढ़ेगी। जैसे राम का चरित्र संसार को स्वीकार्य है,उसी तरह रामराज्य की अनुज्ञा हर नीति में प्रतिपादित किये जाने की ओर अग्रसर है।

नरेन्द्र भाई मोदी ने भारत की स्मिता को अक्षुण्य बनाये रखने में अपना सर्वस्व न्योछावर किया,जीवन का पल पल लगाया,एक एक श्वांस की आहुति दी। देश प्रेम को राष्ट्रभक्ति से अभिप्रेत किया। उन्होंने देश की आत्मा को स्पर्श करने का प्रयास किया,जो एक प्रधानमंत्री को अनिवार्य रूप से करना चाहिए। राजनीति से राष्ट्रनीति नहीं निकलती,बल्कि राष्ट्रनीति से राजनीति निकलती है। इस तरह राष्ट्रनीति को राजनीति से ऊपर मानना होगा। नरेन्द्र मोदी को भलीभांति ज्ञात है कि राजनीति को राष्ट्रनीति की चेरी कैसे बनाया जाय। अर्थात, देश की चेतना को कैसे जागृत किया जा सकता है-यह रणनीति है। लोग भले ही कुछ भी समझें, लेकिन भारत के सशक्तिकरण का रहस्य राष्ट्रवाद में छिपा है। राष्ट्रवाद कहना मुझे अच्छा नहीं लगता, मैं इसे राष्ट्रीयता मानता हूं। देश की चेतना को राष्ट्र

मान सकते हैं। भारत की चेतना को समझना चाहिए। यह बाबरनामा में नही लिखी गयी है। यह ह्वेनसांग या फाह्यान ने भी नहीं लिखी। इसे अंग्रेज इतिहासकारों ने भी नहीं बताया। वेद,शास्त्र और पुराण ने इसे व्याख्यापित किया है। रामराज्य ने राष्ट्र के तत्व को ही अंगीकृत किया है। इसलिए यह प्रतीकात्मक चरित्र है। यह विषय चर्चा करने का नहीं है,अपितु आत्मसात करने का है। इसकी विषयवस्तु मात्र सनातन धर्म से प्रेरित नहीं है,बल्कि संसार भर के आदर्शों का भी आदर्श है, मानकीकरण है। सम्पूर्ण पृथ्वी पर यदि मानवता का शासन प्रशासन चाहिए,तो यह केवल रामराज्य से ही संभव है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी रामराज्य की छांव में कल्याण की राह खोज रहे हैं। मोदी राज में सब के कल्याण का मार्ग मिल गया है। देश विरोधी शक्तियां, राष्ट्र विरोधी तत्व, सनातन विरोधी षड़यंत्रकारी मिल कर मोदी को रोकना चाहते हैं। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा,कभी नहीं होगा। देश प्रेमियों का आत्मविश्वास जागृत हो गया है। राष्ट्र भक्तों का आत्मबल वापस लौटा है। नर नारी की समझ सकारात्मक हो गयी है। बहलाने फुसलाने के दिन बीती चुके हैं। युवा वर्ग बहकावे में नहीं आयेगा,उसे अपने कर्तव्य का बोध हो गया है। मानवता करवट बदल रही है, युग परिवर्तन हो रहा है। रामराज्य की आहट हो रही है। सब ओर से राम के आदर्श की स्वीकरोक्ति है। हर स्थान पर राम के चरित्र का मंगल गान हो रहा है। विदेशों में भी राम की स्वीकरोक्ति व्यापक हो रही है। राजनीति और कूटनीति ने रामराज्य का पाठ पढ़ लिया है।

रामराज्य से आशय राम के आदर्श से है,राम के चरित्र से है,राम के दर्शन से है। रामराज्य का तात्पर्य राम के सिद्धांतों से है,राम के नैतिक मूल्यों से हे,राम की धर्म रक्षा से है। रामराज्य का मनतव्य राम की मैत्री भावना से है,राम की शरणागति से है,राम की उदारता से है। रामराज्य का संदेश राम की दयालुता से है, राम की परदुःखकातरता से है,राम की क्षमाशीलता से है। रामराज्य के केंद्र में राम का जीवन है, जीवन तत्व है। इसलिए, रामराज्य एक वैचारिकी है,निश्चय है,आत्मबोध है। यह प्रतीकात्मक समाज की रचना है,परिवार की संगठनात्मक अवधारणा है, देश के सुधार की कल्पना है,मानव की सफलता का मार्ग है।

नरेन्द्र मोदी रामराज्य को सर्व सुलभ करना चाहते हैं। व्यवहारिक रूप से यह कठिन कार्य है। क्योंकि आज का समाज अशुद्ध है, खंडित है,अशांत है। समाज के अंदर घमासान चल रहा है,आपाधापी मची है,तोड़फोड़ का वातावरण है। वर्तमान काल में स्वार्थों का युद्ध है, धोखे के संबंध हैं, अविश्वास की व्यवस्था है। लोगों में असत्य, अज्ञान व अनाचार का प्रवेश है। किसी न किसी रूप में भ्रष्टाचार का दंश आम जनों में दृष्टिगत है। धर्म, तप, त्याग, प्रेम व कर्तव्य से दूरियां हैं। मतैक्य न होने से, एकता और आपसी समझ के अभाव में राष्ट्र को संभालना बहुत बड़ा दायित्व है। मोदी युग आगे बढ़ रहा है। लोगों में आशा की ज्योति जागी है। लोगों को देश प्रेम और राष्ट्र भक्ति की चेतना आयी है,रामराज्य का अर्थ समझ में आया है। भारतीय संस्कृति का प्रवाह फिर से हष्टिगोचर है। आम जनता में एक बार फिर नये भारत की कल्पना करवट बदल रही है। जन मानस में आत्मविश्वास जागृत हुआ है।

नरेन्द्र भाई मोदी की सोच और हष्टिकोण जिस तरह नये भारत के निर्माण के लिए कटिबद्ध है,उससे अनुमान लगाया जा सकता है कि आर्थिक और सामरिक दृष्टि से भारत आगे बढ़ता जा रहा है। हालांकि,उन्हें रोकने के भी अनेक प्रयास एक साथ चल रहे हैं। इस बात की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता कि षड़यंत्रकारी उनके मार्ग को अवरूद्ध करने में सफल हो जांय। इसलिए,सबसे बड़ी बात यह है कि वर्तमान में समुचित सावधानी या सतर्कता का पालन हर देश प्रेमी करे। नरेन्द्र मोदी का मिशन रूकना नहीं चाहिए। बहुत वर्षों बाद एक वीर भारतीय का विश्व इतिहास में प्रवेश हुआ है। युगों के पश्चात कोई योद्धा भारतीयता के लिए युद्ध कर रहा है, राष्ट्रीयता के लिए संघर्ष कर रहा है।

देश को बचाने के लिए कोई प्रधानमंत्री पहले इतना शक्तिशाली नहीं रहा। सब लकीर के फकीर बने रहे,कभी साहस नहीं जुटा पाये। लेकिन अब एक ऐसा फकीर मिला,जो सबको फकीर बनाने के लिए आया है। त्याग और निरूस्वार्थ की कहानी लिखने आया है। मोदी नामा तैयार हो रहा है। तो, मोदी कौन हैं? इस पर विचार करने कि समय आया है। मोदी अपने परिवार के लिए कुछ नहीं चाहते,न अपने लिये ही कुछ चाहत है। उनके मित्र भी कोई नहीं हैं,जिनके लिए वे स्वार्थ भावना रखें। वे जाति,धर्म,सम्प्रदाय या वर्ग विशेष का मोह नहीं रखते। वे निर्लिप्त हैं, कोई माने या न माने। बाकी, लांछन लगाने के लिए तो राम और कृष्ण पर भी लगाये जाते हैं। हां,आरोप लगाने वाले कौन हैं, इसका परीक्षण अवश्य किया जाय।

वैसे, इस देश में राजनीति का मन मस्तिष्क गली गली में विद्यमान है। बच्चे बच्चे राजनीति की समझ रखते हैं। बल्कि, यहां तो युवाओं का राजनीतिकरण कर दिया गया है। लोगों का जीवन राजनीतिमय होता चला गया। समाज में राजनीति को केंद्र में रख कर समस्त निर्णय होते हैं। सभी समस्याओं का राजनीतिक समाधान खोजने की भूख ने उन्हें उलझा दिया है। किसी भी राजनेता को समस्याओं को सुलझाने में कोई रूचि नहीं,राजनीतिक लाभ उठाने की ललक होती है। इसे राजनीति नहीं,बाजनीति कहते हैं। एक आशा मोदीराज से अवश्य है,जो रामराज्य के पक्ष में खड़ा है। विश्वास भी है, जनता को। रामराज्य आयेगा, जो कभी नहीं जायेगा। सनातन संस्कृति अवश्य ही स्थापित होगी, जो अभी तक नहीं हो सकी। धर्म और संस्कृति का प्रभाव शनैः शनैः समस्त भूमण्डल पर होगा। यह सच है कि भारत इसका नेतृत्व करने में सक्षम है। मोदी ने लोकतंत्र में नेतृत्व को परिभाषित कर दिखाया है, इस तथ्य से कोई इंकार नहीं कर सकता।

राम का विरोध त्रेतायुग में भी था,कलियुग में भी है। विरोधी शक्तियां सदैव सक्रिय रहती हैं। जिस तरह धर्म का विरोध होता है, उसी तरह संस्कृति का भी। नीति,रीति व कीति का भी विरोध होता है। मैं कहता हूं कि यह प्राकृतिक स्थिति है। सत्य है,तो असत्य है। प्रकाश है, तो अंधकार है। पुण्य है, तो पाप है। अनाचार,पापाचार,दुराचार व अन्याय का अंत होना ही धर्म मार्ग है। जीवन में जो धारण करने योग्य है, वह तो धर्म ही है। अधर्म धारण करने योग्य कदापि नहीं है। रामराज्य धर्म का राज है,पुण्य का राज है,प्रकाश का राज है। इसे को मिटा नहीं सकता,हटा नहीं सकता। स्वर्ण लंका जलेगी, कुंभकर्ण मारा जायेगा,फिर मेघनाद भी मारा जायेगा। रावण हारेगा। विभीषण को लंकेश्वर बनना होगा,यह राम की योजना है। जो कुछ त्रेता में हुआ, वह हर युग में दोहराया गया। कलियुग में भी इसकी पुनरावृत्ति होगी। इसलिए, यह मानवता का क्रमिक विकास है। रामराज्य की दिशा में मोदी की पहल है।

सुशासन का आदर्श है,रामराज्य।सबसे महत्वपूर्ण जीवन दर्शन देश की शासन व्यवस्था और सामाजिक परिस्थिति से होकर व्यक्ति के धर्म कर्म पर निरूपित है। इसे मानव शरीर से विश्व कलेवर तक विषयों की पृष्ठभूमि में परखा जा सकता है। 'जस राजा तस प्रजा' अर्थात जैसा राजा होगा, वैसी प्रजा होगी-ऐसी कहावत प्रचलित है। लोकतंत्र में इसका उलट देखा गया,या समझा गया। क्योंकि जनता के मतदान से शासक की नियुक्ति का प्राविधान है। जनता जैसा चाहेगी, वैसा ही होगा। अब शासन व्यवस्था व सामाजिक रचना जनता के मन मस्तिष्क की देन है। जागरूक जनता ही देश के भविष्य को सुरक्षित कर सकती है, अन्यथा नहीं। यह जागरूकता व समझ जन जन में व्याप्त होनी चाहिए,जो देश को नयी दिशा पर बढ़ायेगी। रामराज्य के अतिरिक्त कोई दिशा है ही नहीं,जिस पर नरेन्द्र मोदी को चलना होगा। ❑❑

(लेखक भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के सदस्य और रामराज्य आंदोलन के राष्ट्रीय संयोजक हैं।)

पता : 1/53,विनयखण्ड,
गोमतीनगर,
लखनऊ-226010.

"अपना काम"

सारंग त्रिपाठी
अपर जिला सहकारी अधिकारी
अधिकोषण अनुभाग,
मुख्यालय सहकारिता

भोर होते ही
जुट जाते हैं हम
किसी भूत की तरह अपने काम में
कब उगता सूरज
कब डूबता नहीं जानते
आपा-धापी में लड़ते-भिड़ते
पहुँचते हैं दफ्तर
फाइलों के सागर में लगा लेते हैं डुबकी,
कब होती है शाम, बताती है घड़ी
बन्द हो जाता है एक काम
शुरू हो जाता है दूसरा काम
भय लगता है.....
क्या यूँ ही अनमोल जीवन होता है तमाम,
सुख, उल्लास, भावनायें, प्रेम
मुस्कान, आँसू पिस जाते हैं यूँ हीं
दिन और रात के बीच
करते-करते अपना काम।
कब ऊबेंगे हम करते-करते काम
कब बचायेंगे वह क्षण जब खिलेगी मुस्कान
करेगा कोई प्यार
क्योंकि वहीं तो होगा जीवन का काम
हां असली काम।।

❑❑

दूरभाष : 9935603236

xko&in'k ,o n'k&fon'k rd dh lgdkjh xfrfof/k;k dh tkudkjh gr i<

''सहकारिता''

(हिन्दी मासिक पत्रिका)

lgdkfjrk] lektokn] df"k ipk;rhjkt ,o xkeh.k fu;ktu dk Kku ni.k

''सहकारिता''

(हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र)

lgdkjh xfrfof/k;k dh tkudkjh gr

सहकारिता पढ़िये, सहकारिता से जुड़िये

SAHKARITA
March-2024

RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

सहकारिता के सिद्धान्त

स्वैच्छिक और खुली सदस्यता

प्रजातांत्रिक सदस्य–नियंत्रण

सदस्य की आर्थिक भागीदारी

शिक्षा प्रशिक्षण और सूचना

स्वायत्तता और स्वतंत्रता

सहकारी समितियों में परस्पर सहयोग

सामाजिक कर्त्तव्य बोध